भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA

वर्ग संख्या
Class No. 182.Mc

पुस्तक संख्या
Book No. 853.4

रा०पु०/ N.L. 38

MGIPK—LLNLC/67—3-1-68—1,50,000

182.1ne.852.4.

সংস্কৃতভাষা ও সংস্কৃতসাহিত্যশাস্ত্রবিষয়ক

প্রস্তাব।

L.L.CII

শ্রীঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর বিরচিত।

১৯০৯ সংবতের ফাল্গুনের অষ্টাবিংশ দিবসে

ীটন সোসাইটী নামক সমাজে

পঠিত।

কলিকাতা।

সংস্কৃতযন্ত্রে মুদ্রিত।

সংবৎ ১৯১০।

NATIONAL LIBRARY
No. Pamp 4388
DATE 9/10/09
CALCUTTA

182 Mc 853.4

সংস্কৃতভাষা ও সংস্কৃতসাহিত্যশাস্ত্র বিষয়ক প্রস্তাব।

আমি এই সমাজে বাঙ্গালা ও ইঙ্গরেজিতে সংস্কৃত ভাষা ও সংস্কৃত সাহিত্যশাস্ত্র বিষয়ক প্রস্তাব পাঠ করিবার ভার গ্রহণ করিয়াছিলাম। ইঙ্গরেজি ভাষায় লিখিত প্রস্তাব গত মাসের সমাজে পঠিত হইয়াছে; এই বারে সেই বিষয় বাঙ্গালায় পঠিত হইবেক। ইঙ্গরেজিতে যে বিষয় যে রূপে লিখিত হইয়াছিল বাঙ্গালাতেও সেই বিষয় সেই রূপে সঙ্কলিত হইয়াছে। কিন্তু ইঙ্গরেজিতে, ইঙ্গরেজি পুস্তক হইতে,যে সকল প্রমাণ উদ্ধৃত হইয়াছিল, বাঙ্গালাতে,কোন কোন স্থলে, তাহার ফলিতার্থ সঙ্কলন করা গিয়াছে এবং স্থল বিশেষে, তাদৃশ আবশ্যক বোধ না হওয়াতে, উহা একবারেই পরিত্যাগ করা গিয়াছে। এতদ্ব্যতিরিক্ত, ইঙ্গরেজিতে কোন কোন স্থলে যে বিষয়ের বাহুল্য ছিল বাঙ্গালায় তাহা সংক্ষেপে উল্লিখিত হইয়াছে; এবং ইঙ্গরেজিতে যে বিষয়ের সংক্ষেপ ছিল বাঙ্গালায় স্থলবিশেষে তাহার বাহুল্যও হইয়া উঠিয়াছে।

সংস্কৃতভাষা।

সংস্কৃত অতিপ্রাচীন ও অতি উৎকৃষ্ট ভাষা। এই অপূর্ব্ব ভাষায় ভূরি ভূরি শব্দ, ভূরি ভূরি ধাতু, ভূরি ভূরি বিভক্তি ও ভূরি ভূরি প্রত্যয় আছে এবং এক এক শব্দে ও এক এক ধাতুতে নানা প্রত্যয় ও নানা বিভক্তি যোগ করিয়া ভূরি ভূরি নূতন শব্দ ও ভূরি ভূরি পদ সিদ্ধ করা যাইতে পারে। এরূপ অভিপ্রায়ই নাই যে এই ভাষাতে অতি সুন্দররূপে ব্যক্ত করিতে পারা যায় না; এবং এরূপ বিষয়ই নাই যে এই ভাষাতে সুচারু রূপে রচনা করিতে পারা যায় না। অতি প্রাচীন কালাবধি অতি প্রধান প্রধান পণ্ডিতেরা নানা বিষয়ে নানা গ্রন্থ রচনা করিয়া এই ভাষাকে সম্যক্ মার্জ্জিত করিয়া গিয়াছেন। সংস্কৃত ভাষায় দুই

পদ পরস্পর সন্নিহিত হইলে পূর্ব্ব, পর অথবা উভয় বর্ণই প্রায় রূপান্তর প্রাপ্ত হয়। যে প্রক্রিয়া দ্বারা এই রূপান্তরপ্রাপ্তি সিদ্ধ হয় তাহাকে সন্ধি বলে। সন্ধি প্রক্রিয়া দ্বারা ভাষার অশ্রাব্যতা পরীহার ও সুশ্রাব্যতা সম্পাদন হইয়া থাকে। আর প্রক্রিয়া বিশেষ দ্বারা অনেক পদকে একত্র যোগ করিয়া এক পদ করা যায়। এই অনেক পদের একপদীকরণ প্রণালীকে সমাস বলে। সমাস প্রক্রিয়া দ্বারা সংক্ষিপ্ততা ও সুশ্রাব্যতা সম্পন্ন হইয়া থাকে। কিন্তু ইহা অবশ্য স্বীকার করিতে হইবেক যে সমাসঘটিত বাক্য সকল অপেক্ষাকৃত দুরূহ; এবং আবৃত্তিমাত্র তত্তদ্বাক্যের অর্থবোধ নির্ব্বাহ হইয়া উঠে না। সমাস প্রণালী অবলম্বন করিয়া ইচ্ছানুরূপ দীর্ঘ পদ প্রস্তুত করা যাইতে পারে। প্রাচীন গ্রন্থকর্ত্তারা তাদৃশ সমাস-প্রিয় ছিলেন না। কিন্তু নব্যেরা সচরাচর অতি দীর্ঘ দীর্ঘ সমাস করিয়া থাকেন। কোন কোন উৎকৃষ্ট কাব্য গ্রন্থেও বিংশতিপদ পর্য্যন্তও একপদীকৃত দেখিতে পাওয়া যায়। সংস্কৃত বৈয়াকরণেরা সন্ধি, সমাস, পদসাধন, ও প্রকৃতিপ্রত্যয়যোগে নূতন নূতন শব্দ সঙ্কলন, করিবার যে সমস্ত অভিনব পথ প্রস্তুত করিয়া গিয়াছেন তদ্দ্বারা সংস্কৃত এক অদ্ভুত ভাষা হইয়া উঠিয়াছে। সংস্কৃতভাষায় কি সরল, কি বক্র, কি মধুর, কি কর্কশ, কি ললিত, কি উদ্ধত সর্ব্বপ্রকার রচনাই সমান সুন্দররূপে সম্পন্ন হইয়া উঠে। সংস্কৃত রচনাতে এরূপ অসাধারণ কৌশল প্রদর্শিত হইতে পারে যে তদ্দর্শনে বিস্ময়াপন্ন হইতে হয়।

সংস্কৃত রচনাতে শব্দঘটিত যে সকল কৌশল প্রদর্শিত হইতে পারে তাহার কতিপয় উদাহরণ উদ্ধৃত হইতেছে।

নিম্নে যে শ্লোক উদ্ধৃত হইল ইহা কেবল ভ এবং র এই দুই ব্যঞ্জনবর্ণে রচিত।

भूरिभिर्भारिभिर्भीरैर्भूभारैरभिरेभिरे।
भेरीरेभिभिरभ्राभैरभीरुभिरिभैरिभाः ॥

শিশুপালবধ।

নিম্নলিখিত শ্লোক কেবল দ এই একমাত্র ব্যঞ্জন বর্ণে রচিত।

দাদদো দুদ্দুদ্দাদী দাদাদো দূদদী দদোঃ।
দুদ্দাদং দদদে দুদ্দে দাদাদদ দদোদদঃ॥
শিশুপালবধ।

যমক রচনার চাতুর্য্য প্রদর্শনার্থে নিম্নলিখিত কয়েক শ্লোক উদ্ধৃত হইল।

নব পলাশ পলাশ বনং পুরঃ স্ফুট পরাগ পরাগ তপঙ্কজম্।
মৃদু লতান্ত লতান্ত মলোকয়ত্ স সুরভিংসু রভিংসু মনোভরৈঃ॥
শিশুপালবধ।

নসমা নসমা নসমা নসমা গমমায় সমীক্ষ্য বসন্তনভঃ।
ভ্রমদ ভ্রমদ ভ্রমদ ভ্রমদ ভ্রমরচ্ছলতঃ খলু কামিজনঃ॥
নলোদয়।

ঘনং বিদার্য্যার্জ্জুনবাণপূগং সসার বাণো যুগলোচনস্য।
ঘনং বিদার্য্যার্জ্জুনবাণপূগং সসার বাণো যুগলোচনস্য॥
কিরাতার্জ্জুনীয়।

বভৌ মরুত্বান্ বিকৃতঃ সমুদ্রো বভৌ মরুত্বান্ বিকৃতঃ সমুদ্রঃ।
বভৌ মরুত্বান্ বিকৃতঃ সমুদ্রো বভৌ মরুত্বান্ বিকৃতঃ সমুদ্রঃ॥
ভট্টিকাব্য।

নিম্নলিখিত দুই শ্লোক আদি হইতে আরম্ভ করিয়া পাঠ করিলে যেরূপ হয় অন্ত হইতে পাঠ করিলেও অবিকল সেইরূপ হয়।

বাহনা জনি মানাসে সারাজা বনমাততঃ।
মত্তসারগ রাজেভে ভারীহাবজ্জনধ্বনি॥
নিধ্বনজ্জবহারীভা ভেজে রাগরসাত্তমঃ।
তত মানবজারা সা সেনামা নিজনাহবা॥
শিশুপালবধ।

নিম্নলিখিত শ্লোক নানা দিকে এক প্রকার পাঠ করা যায়।

दे वा का नि नि का वा दे
वा हि का स्व स्व का हि वा।
का का रे भ भ रे का का
नि स्व भ व्य व्य भ स्व नि॥

কিরাতার্জ্জুনীয়।

সংস্কৃত ভাষায় সরল, মধুর, ললিত প্রভৃতি রচনা কিরূপ হইতে পারে তাহারও উদাহরণ প্রদর্শনার্থে গদ্যে ও পদ্যে কয়েকটী স্থল উদ্ধৃত হইতেছে।

सखे पुण्डरीक नैतदनुरूपं भवतः; क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्गः; धैर्य्यधना हि साधवः। किं यः कश्चित् प्राकृत इव विक्लवीभवन्तमात्मानं न रुणत्सि। कुतस्तवापूर्व्वोऽयमद्येन्द्रियोपप्लवः, येनास्येवं कृतः। क्व ते तद्धैर्य्यं, क्वासाविन्द्रियजयः, क्व तद्वशित्वं चेतसः, क्व सा प्रशान्तिः, क्व तत् कुलक्रमागतं ब्रह्मचर्य्यं, क्व सा सर्व्वविषयनिरुत्सुकता, क्व ते गुरूपदेशाः, क्व तानि श्रुतानि, क्व ता वैराग्यबुद्धयः, क्व तदुपभोगविद्वेषित्वं, क्व सा सुखपराङ्मुखता, क्वासौ तपस्यभिनिवेशः, क्व सा संयमिता, क्व सा भोगानामुपर्य्यरुचिः, क्व तत् यौवनानुशासनम्। सर्व्वथा निष्फला प्रज्ञा, निर्गुणो धर्म्मशास्त्राभ्यासः, निरर्थकः संस्कारः, निरुपकारको गुरूपदेशविवेकः, निष्प्रयोजना प्रबुद्धता, निष्कारणं ज्ञानम्; यदत्र भवादृशा अपि रागाभिषङ्गैः कलुषीक्रियन्ते प्रमादैश्चाभिभूयन्ते। कथं करतलाद्गलितामपहृतामक्षमालामपि न लक्षयसि; अहो विगतचेतनत्वम्; अपहृता नामेयम्; इदमपि तावदपक्रियमाणमनयानार्य्यया निवार्य्यतां हृदयमिति।

इति परिसमापिताहारां, निर्वर्त्तितसन्ध्योचिताचारां, शिला-

ततो विश्रब्धमुपविष्टां निभृतमुपसृत्य, नातिदूरे समुपविश्य, मुहूर्त्त-मिव स्थित्वा चन्द्रापीडः सविनयमवादीत्, भगवति त्वत्प्रसादप्राप्ति प्रोत्साहितेन कुतूहलेनाकुलीक्रियमाणो मानुषतासुलभो लघिमा बलादनिच्छन्तमपि मां प्रश्नकर्म्मणि नियोजयति। जनयति हि प्रभुप्रसादलवोऽपि प्रागल्भ्यमधीरप्रकृतेः; स्वल्पाप्येकदेशावस्थानकालकला परिचयमुत्पादयति; अणुरप्युपचारपरिग्रहः प्रणयमारोपयति। तद् यदि नातिखेदकरमिव, ततः कथनेनात्मानमनुग्राह्यमिच्छामि।

कादम्बरी।

वनस्पतीनां सरसां नदीनां तेजस्विनां कान्तिभृतां दिशाञ्च।
निर्याय तस्याः स पुरः समन्तात् श्रियं दधानां शरदं ददर्श॥
निशातुषारैर्नयनाम्बुकल्पैः पत्रान्तपर्य्यागलदच्छबिन्दुः।
उपारुरोदेव नदत्पतङ्गः कुमुद्वतीं तीरतरुर्दिनादौ॥
वनानि तोयानि च नेत्रकल्पैः पुष्पैः सरोजैश्च निलीनभृङ्गैः।
परस्परां विस्मयवन्ति लक्ष्मीमालोकयाञ्चक्रुरिवादरेण॥
दत्तावधानं मधुलेहिगीतौ प्रशान्तचेष्टं हरिणं जिघांसुः।
आकर्णयन्नुत्सुकहंसनादान् लक्ष्ये समाधिं न दधे मृगावित्॥
अदृश्यताम्भांसि नवोत्पलानि रुतानि चाश्रोषत षट्पदानाम्।
आघ्रायि वान् गन्धवहः सुगन्धस्तेनारविन्दव्यतिषङ्गवांश्च॥
लतानुपातं कुसुमान्यगृह्णात् स नद्यवस्कन्दमुपास्पृशच्च।
कुतूहलाच्चारुशिलोपवेशं काकुत्स्थ ईषत् स्मयमान आस्त॥
दिग्व्यापिनीर्लोचनलोभनीया मृजान्वयाः स्नेहमिव स्रवन्तीः।
ऋज्वायताः शस्यविशेषपङ्क्तीस्तुतोष पश्यन् वितृणान्तरालाः॥
वियोगदुःखानुभवानभिज्ञैः काले नृपांशं विहितं ददद्भिः।
आहार्य्यशोभारहितैरमायैरैक्षिष्ट पुम्भिः प्रचितान् स गोष्ठान्॥

स्त्रीभूषणं चेष्टितमप्रगल्भं चारूण्यवक्राण्यपि वीक्षितानि ।
ऋजूंश्च विश्वासकृतः स्वभावान् गोपाङ्गनानां मुमुदे विलोक्य ॥
सितारविन्दप्रचयेषु लीनाः संसक्तफेनेषु च सैकतेषु ।
कुन्दावदाताः कलहंसमालाः प्रतीयिरे श्रोत्रसुखैर्निनादैः ॥

भट्टिकाव्य ।

अथार्द्धरात्रे स्तिमितप्रदीपे शय्यागृहे सुप्तजने प्रबुद्धः ।
कुशः प्रवासस्थकलत्रवेशामदृष्टपूर्व्वां वनितामपश्यत् ॥
सा साधुसाधारणपार्थिवर्द्धेः स्थित्वा पुरस्तात् पुरुहूतभासः ।
जेतुः परेषां जयशब्दपूर्व्वं तस्याञ्जलिं बन्धुमतो बबन्ध ॥
अथानपोढार्गलमप्यगारं छायामिवादर्शतलं प्रविष्टाम् ।
सविस्मयो दाशरथेस्तनूजः प्रोवाच पूर्व्वार्द्धविसृष्टतल्पः ॥
लब्धान्तरा सावरणेऽपि गेहे योगप्रभावो नच दृश्यते ते ।
बिभर्षि चाकारमनिर्वृतानां मृणालिनी हैममिवोपरागम् ॥
का त्वं शुभे कस्य परिग्रहो वा किं वा मदभ्यागमकारणं ते ।
आचक्ष्व मत्वा वशिनां रघूणां मनः परस्त्रीविमुखप्रवृत्ति ॥
तमब्रवीत् सा गुरुणानवद्या या नीतपौरा स्वपदोन्मुखेन ।
तस्याः पुरः सम्प्रति वीतनाथां जानीहि राजन्नधिदेवतां माम् ॥
वस्वौकसारामभिभूय साहं सौराज्यबद्धोत्सवया विभूत्या ।
समग्रशक्तौ त्वयि सूर्य्यवंश्ये सति प्रपन्ना करुणामवस्थाम् ॥
विशीर्णतल्पाट्टशतो निवेशः पर्य्यस्तशालः प्रभुणा विना मे ।
विडम्बयत्यस्तनिमग्नसूर्य्यं दिनान्तमुग्रानिलभिन्नमेघम् ॥
निशासु भास्वत्कलनूपुराणां यः सञ्चरोऽभूदभिसारिकाणाम् ।
नदन्मुखोल्काविचितामिषाभिः स वाह्यते राजपथः शिवाभिः ॥
आस्फालितं यत् प्रमदाकराग्रैर्मृदङ्गधीरध्वनिमन्वगच्छत् ।

वन्यैरिदानीं महिषैस्तदम्भः शृङ्गाहतं क्रोशति दीर्घिकाणाम् ॥
वृक्षेशया यष्टिनिवासभङ्गात् मृदङ्गशब्दापगमादलास्याः ।
प्राप्ता दवोल्काहतशेषबर्हाः क्रीडामयूरा वनबर्हिणत्वम् ॥
सोपानमार्गेषु च येषु रामा निक्षिप्तवत्यश्चरणान् सरागान् ।
सद्योहतन्यङ्कुभिरस्रदिग्धं व्याघ्रैः पदं तेषु निधीयते मे ॥
चित्रद्विपाः पद्मवनावतीर्णाः करेणुभिर्दत्तमृणालभङ्गाः ।
नखाङ्कुशाघातविभिन्नकुम्भाः संरब्धसिंहप्रहृतं वहन्ति ॥
कालान्तरश्यामसुधेषु नक्तमितस्ततोरूढतृणाङ्कुरेषु ।
त एव मुक्तागुणशुद्धयोऽपि हर्म्येषु मूर्च्छन्ति न चन्द्रपादाः ॥
आवर्ज्य शाखाः सदयञ्च यासां पुष्पाण्युपात्तानि विलासिनीभिः ।
वन्यैः पुलिन्दैरिव वानरैस्ताः क्लिश्यन्त उद्यानलता मदीयाः ॥
रात्रावनाविष्कृतदीपभासः कान्तामुखश्रीवियुता दिवापि ।
तिरस्क्रियन्ते कृमितन्तुजालैर्विच्छिन्नधूमप्रसरा गवाक्षाः ॥
बलिक्रियावर्ज्जितसैकतानि स्नानीयसंसर्गमनाप्नुवन्ति ।
उपान्तवानीरगृहाणि दृष्ट्वा शून्यानि दूये सरयूजलानि ॥
तदर्हसीमां वसतिं विसृज्य मामभ्युपेतुं कुलराजधानीम् ।
हित्वा तनुं कारणमानुषीं तां यथा गुरुस्ते परमात्ममूर्त्तिम् ॥
तथेति तस्याः प्रणयं प्रतीतः प्रत्यग्रहीत् प्राग्रहरो रघूणाम् ।
पूरप्यभिव्यक्तमुखप्रसादा शरीरबन्धेन तिरोबभूव ॥

रघुवंश ।

सुकुमारमहो लघीयसां हृदयं तद्गतमप्रियं यतः ।
सहसैव समुद्गिरन्त्यमी क्षपयन्त्येव हि तन्मनीषिणः ॥
उपकारपरः स्वभावतः सततं सर्व्वजनस्य सज्जनः ।
असतामनिशं तथाप्यहो गुरुहृद्रोगकरी तदुन्नतिः ॥

परितप्यत एव नोत्तमः परितप्तोऽप्यपरः सुसंवृतिः ।
परवृद्धिभिराहितव्यथः स्फुटनिर्भिन्नदुराशयोऽधमः ॥
अनिराकृततापसम्पदं फलहीनां सुमनोभिरुज्झिताम् ।
खलतां खलतामिवासतीं प्रतिपद्येत कथं बुधो जनः ॥
प्रतिवाचमदत्त केशवः शपमानाय न चेदिभूभुजे ।
अनुहुंकुरुते घनध्वनिं नहि गोमायुरुतानि केशरी ॥
जितरोषरया महाधियः सपदि क्रोधजितो लघुर्जनः ।
विजितेन जितस्य दुर्मतेर्मतिमद्भिः सह का विरोधिता ॥
वचनैरसतां महीयसो न खलु व्येति गुरुत्वमुद्धतैः ।
किमपैति रजोभिरौर्वरैरवकीर्णस्य मणेर्महार्घता ॥
परितोषयिता न कश्चन स्वगतो यस्य गुणोऽस्ति देहिनः ।
परदोषकथाभिरल्पकः स्वजनं तोषयितुं किलेच्छति ॥
सहजान्धदृशः स्वदुर्णये परदोषेक्षणदिव्यचक्षुषः ।
स्वगुणोच्चगिरो मुनिव्रताः परवर्णग्रहणेष्वसाधवः ॥
किमिवाखिललोककीर्त्तितं कथयत्यात्मगुणं महामनाः ।
वदिता न लघीयसोऽपरः स्वगुणं तेन वदत्यसौ स्वयम् ॥

शिशुपालबध ।

সংস্কৃত ভাষা এক্ষণে আর কথোপকথনে ও লৌকিক ব্যবহারে প্রচলিত নহে। ভারতবর্ষীয় পণ্ডিতেরা কহিয়া থাকেন সংস্কৃত দেবভাষা। ভারতবর্ষীয়েরা আদিকালাবধি ঐ দেবভাষায় কথোপকথন ও লৌকিক ব্যবহার নির্ব্বাহ করিত। তদনুসারে সংস্কৃত ভারতবর্ষীয় আদিম নিবাসিলোকদিগের ভাষা হয়। কিন্তু ইয়ুরোপীয় পণ্ডিতেরা শব্দবিদ্যানুশীলন প্রভাবে নিরূপণ করিয়াছেন সংস্কৃত ভারতবর্ষের আদিম নিবাসিলোকদিগের ভাষা নহে; সংস্কৃতভাষি লোকেরা পৃথিবীর অন্য কোন প্রদেশ হইতে আসিয়া ভারত-

বর্ষে আবাস গ্রহণ করিয়াছে। সেই প্রদেশ ইরান। তাঁহাদিগের গবেষণা দ্বারা নির্দ্ধারিত হইয়াছে যে অতি পূর্ব্বকালে ইরানের আদিম নিবাসি লোকেরা সময়ে সময়ে ভারতবর্ষ, গ্রীশ, ইটালি, জর্ম্মনি প্রভৃতি প্রদেশে বাস করিয়াছে। ইহারা ইরানে অবস্থান কালে এক জাতি ও একভাষাভাষী ছিল। ঐ এক জাতি ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশে অবস্থিত হইয়া হিন্দু, গ্রীক, রোমক, জর্ম্মন প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন জাতি হইয়াছে; এবং ঐ এক ভাষাই ক্রমে ক্রমে রূপান্তর প্রাপ্ত হইয়া ভারতবর্ষে সংস্কৃত, গ্রীশে গ্রীক, ইটালিতে লাটিন, জর্ম্মনিতে জর্ম্মন প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন ভাষা হইয়া উঠিয়াছে। কালক্রমে বিভিন্ন প্রদেশে এই সকল ভাষা এরূপ রূপান্তর প্রাপ্ত হইয়াছে যে উহাদিগের পরস্পর কোন সম্বন্ধ আছে ইহা আপাততঃ প্রতীয়মান হয় না। কিন্তু এই সমস্ত যে এক মূল ভাষার পরিণামবিশেষমাত্র এ বিষয়ে সংশয় হইবার বিষয় নাই। ইয়ুরোপীয় পণ্ডিতেরা এ বিষয়ে যে সমস্ত প্রমাণ প্রয়োগ প্রদর্শন করিয়াছেন সংক্ষেপে সে সকলের উল্লেখ করিলে হৃদয়ঙ্গম হওয়া কঠিন। বিশেষতঃ বাঙ্গালা ভাষার অদ্যাপি এরূপ শ্রীবৃদ্ধি হয় নাই যে ঐ সমস্ত বিষয় ইহাতে সংক্ষেপে ও সুচারুরূপে ব্যক্ত করা যাইতে পারে; এই নিমিত্ত ফলিতার্থমাত্র উল্লিখিত হইল।

সাহিত্যশাস্ত্র।

সংস্কৃত সাহিত্যশাস্ত্র বহুবিস্তৃত। সমুদায়ের সবিস্তর বর্ণন করিতে হইলে এত বাহুল্য হয় যে এই সভায় প্রস্তাব পাঠের নিমিত্ত যে সময় নির্দ্দিষ্ট আছে তন্মধ্যে পাঠ নির্ব্বাহ হওয়া কোন ক্রমেই সম্ভাবিত নহে। এই নিমিত্ত প্রধান প্রধান গ্রন্থকর্ত্তা ও তাঁহাদিগের প্রধান প্রধান গ্রন্থমাত্র এ স্থলে উল্লিখিত হইবেক। এতদ্দেশে ও ইয়ুরোপে রামায়ণ ও মহাভারত কাব্যমধ্যে পরিগণিত হইয়া থাকে। কিন্তু এই দুই গ্রন্থ কাব্য অপেক্ষা ধর্ম্মশাস্ত্র বলিয়াই

অধিক প্রসিদ্ধ ও অধিক মান্য। অতএব এস্থলে তাহাদিগের উল্লেখ করা যাইবেক না। বিশেষ বিবেচনা করিয়া দেখিলে, রামায়ণ ও মহাভারত পুরাণবিশেষ। অতএব যদি পুরাণের বিষয় বর্ণিত হয় এই উভয়েরও সেই সমভিব্যাহারে বর্ণিত হওয়াই ন্যায্য।

সংস্কৃত আলঙ্কারিকেরা সাহিত্যশাস্ত্রকে দুই প্রধান ভাগে বিভক্ত করেন শ্রব্যকাব্য ও দৃশ্যকাব্য। তাঁহারা এই উভয় বিভাগের মধ্যেই সমুদায় সাহিত্যশাস্ত্র সমাবেশিত করিয়াছেন। শ্রব্য কাব্য ত্রিবিধ; পদ্যময়, গদ্যময়, গদ্যপদ্যময়। পদ্যময় কাব্যও ত্রিবিধ মহাকাব্য, খণ্ডকাব্য, কোষকাব্য। গদ্যময় কাব্যকে আলঙ্কারিকেরা কথা ও আখ্যায়িকা এই দুই ভাগে বিভক্ত করিয়া থাকেন। কিন্তু এই দুয়ের বৈলক্ষণ্য এমত সামান্য যে ইহাদিগের ভাগদ্বয়ে বিভাগ অনাবশ্যক ও অকিঞ্চিৎকর। গদ্যপদ্যময় কাব্যকে চম্পূ বলে। চম্পূ কাব্যের বিভাগ নাই।

মহাকাব্য।

কোন দেবতার, অথবা সদ্বংশজাত অশেষসদ্গুণসম্পন্ন ক্ষত্রিয়ের, কিম্বা একবংশোদ্ভব বহু ভূপতিদিগের বৃত্তান্ত লইয়া যে কাব্য রচিত হয় তাহাকে মহাকাব্য বলে। মহাকাব্য নানা সর্গে অর্থাৎ পরিচ্ছেদে বিভক্ত। সর্গসংখ্যা অষ্টাধিক না হইলে তাহাকে মহাকাব্য বলে না। সংস্কৃত ভাষায় যত মহাকাব্য আছে তাহাতে দ্বাবিংশতির অধিক সর্গ দেখিতে পাওয়া যায় না। কোন মহাকাব্য আদ্যোপান্ত এক ছন্দে রচিত নহে। এক এক সর্গ এক এক ভিন্ন ভিন্ন ছন্দে রচিত। সর্গের অবসানে এক, দুই, অথবা ততোঽধিক অন্য অন্য ছন্দের শ্লোক থাকে। সকল সর্গই যে এক এক ভিন্ন ভিন্ন ছন্দে রচিত এমত নহে। মহাকাব্যে দুই, তিন, চারি, পাঁচ সর্গও এক ছন্দে রচিত দেখিতে পাওয়া যায়। কোন কোন সর্গ নানা ছন্দেও রচিত হইয়া থাকে। সর্গ সকল অতি সঙ্ক্ষিপ্ত অথবা অতিবিস্তৃত নহে।

সর্গের শেষে পর সর্গের বৃত্তান্ত সূচনা থাকে। মহাকাব্য সকল আদিরস অথবা বীররস প্রধান, মধ্যে মধ্যে অন্যান্য রসেরও প্রসঙ্গ থাকে। কবি, কিম্বা বর্ণনীয় বিষয়, অথবা নায়কের নামানুসারে মহাকাব্যের নামনির্দ্দেশ হয়।

রঘুবংশ।

সংস্কৃত ভাষায় যত মহাকাব্য আছে কালিদাসপ্রণীত রঘুবংশ সেই সর্ব্বাপেক্ষা সর্ব্বাংশে উৎকৃষ্ট। কালিদাস কীদৃশ কবিত্বশক্তি-সম্পন্ন ছিলেন, বর্ণনা করিয়া অন্যের হৃদয়ঙ্গম করা দুঃসাধ্য। যাঁহারা কাব্যের যথার্থরূপ রসাস্বাদে অধিকারী সেই সহৃদয় মহাশয়রাই বুঝিতে পারেন কালিদাস কিরূপ কবিত্বশক্তি লইয়া ভূমণ্ডলে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন। তিনি সর্ব্বোৎকৃষ্ট মহাকাব্য, সর্ব্বোৎকৃষ্ট খণ্ডকাব্য, সর্ব্বোৎকৃষ্ট নাটক লিখিয়া গিয়াছেন। বোধ হয় কোন দেশের কোন কবি আমাদিগের কালিদাসের ন্যায় সকল বিষয়ে সমান সৌভাগ্যশালী ও ক্ষমতাপন্ন ছিলেন না।

তিনি যে অলৌকিক কবিত্বশক্তি পাইয়াছিলেন, স্বরচিত কাব্য সমূহে সেই শক্তি সম্পূর্ণরূপ প্রদর্শন করিয়া গিয়াছেন। তাঁহার বর্ণনা সকল পাঠ করিয়া চমৎকৃত ও মোহিত হইতে হয়। তাহাতে অত্যুক্তির সংস্রবমাত্র দেখিতে পাওয়া যায় না; আদ্যোপান্ত স্বভাবোক্তি অলঙ্কারে অলঙ্কৃত। বস্তুতঃ এবম্বিধ সম্পূর্ণরূপ স্বভাবানুযায়িনী ও একান্তহৃদয়গ্রাহিণী বর্ণনা সংস্কৃত ভাষায় আর দেখিতে পাওয়া যায় না। কালিদাসের উপমা অতি মনোহর; বোধ হয়, কোন দেশের কোন কবি উপমা বিষয়ে কালিদাসের সদৃশ নহেন। তিনি এরূপ সঙ্ক্ষেপে, ও এরূপ লোকসিদ্ধ বিষয় লইয়া, উপমা সঙ্কলন করেন যে পাঠকমাত্রেরই অনায়াসে ও আবৃত্তিমাত্র উপমান ও উপমেয়ের সৌসাদৃশ্য হৃদয়ঙ্গম হয়। তাঁহার রচনা সংস্কৃত রচনার আদর্শ স্বরূপ হইয়া রহিয়াছে। যাঁহারা তাঁহার পূর্ব্বে সংস্কৃত রচনা করিয়া গিয়াছেন, কিম্বা যাঁহারা তাঁহার উত্তরকালে সংস্কৃত

রচনা করিয়াছেন, কি কবি কি অন্যান্য গ্রন্থকার, কাহারই রচনা তাঁহার রচনার ন্যায় চমৎকারিণী ও মনোহারিণী নহে। তাঁহার রচনা সরল মধুর ও ললিত; তিনি একটীও অনাবশ্যক অথবা পরিবর্ত্তসহ শব্দ প্রয়োগ করেন নাই। কালিদাসের গ্রন্থ পাঠ করিলে ইহা স্পষ্ট প্রতীয়মান হয় যে ঐ সমস্ত তাঁহার লেখনীর মুখ হইতে অক্লেশে ও অনর্গল নির্গত হইয়াছে, রচনা বা ভাবসঙ্কলনের নিমিত্ত এক মুহূর্ত্তও চিন্তা করিতে হয় নাই। বস্তুতঃ এরূপ রচনা ও এরূপ কবিত্বশক্তি এই উভয়ের একত্র সঙ্ঘটন অতি বিরল। এই নিমিত্তই কালিদাসপ্রণীত কাব্যের এত আদর ও এত গৌরব; এই নিমিত্তই ভারতবর্ষীয় লোকেরা কালিদাসকে সরস্বতীর বরপুত্র বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়া থাকেন; এই নিমিত্তই প্রসন্নরাঘবকর্ত্তা জয়দেব স্বীয় নাটকের প্রস্তাবনাতে কালিদাসকে কবিকুলগুরু বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন; এবং এই নিমিত্তই কি স্বদেশে কি বিদেশে কালিদাসের নাম দেদীপ্যমান হইয়া রহিয়াছে।

কালিদাস, এই রূপ অলৌকিক কবিত্বশক্তি ও এইরূপ অদ্বিতীয় রচনাশক্তি সম্পন্ন হইয়াও, এরূপ অভিমানশূন্য ছিলেন এবং আপনাকে এরূপ সামান্য জ্ঞান করিতেন যে শুনিলে বিস্ময়াপন্ন হইতে হয়। তিনি রঘুবংশের প্রারম্ভে লিখিয়াছেন, "যেমন বামন উন্নতপুরুষপ্রাপ্য ফলগ্রহণাভিলাষে বাহুপ্রসারণ করিয়া উপহাসাস্পদ হয়, সেইরূপ, অক্ষম আমি কবিকীর্ত্তিলাভে অভিলাষী হইয়াছি, উপহাসাস্পদ হইব"। কালিদাস, অদ্বিতীয় বিদ্যোৎসাহী গুণগ্রাহী বিখ্যাতনামা বিক্রমাদিত্যের সভার নবরত্নের অন্তর্ব্বর্ত্তী ছিলেন; সুতরাং ঊনবিংশতি শত বৎসর পূর্ব্বে প্রাদুর্ভূত হইয়াছিলেন।

কালিদাসের যে সমস্ত গুণ বর্ণিত হইল প্রায় তৎপ্রণীত যাবতীয় কাব্যেই সেই সমুদায় সুস্পষ্ট লক্ষিত হয়। রঘুবংশে সূর্য্যবংশীয় নরপতিগণের চরিত্র বর্ণিত হইয়াছে। এই মহাকাব্য ঊনবিংশতি সর্গে বিভক্ত। প্রথম আট সর্গে দিলীপ, রঘু, অজ এই তিন

রাজার বর্ণন আছে। নবম অবধি পঞ্চদশ পর্য্যন্ত সাত সর্গে দশরথ ও রামের চরিত্র বর্ণিত হইয়াছে। অবশিষ্ট চারি সর্গে, কুশ অবধি অগ্নিবর্ণ পর্য্যন্ত, রামের উত্তরাধিকারিদিগের বৃত্তান্ত সঙ্কলিত আছে। রঘুবংশের আদি অবধি অন্ত পর্য্যন্ত সর্ব্বাংশই সর্ব্বাঙ্গসুন্দর। যে অংশ পাঠ করা যায় সেই অংশেই অদ্বিতীয় কবি কালিদাসের অলৌকিক কবিত্বশক্তির সম্পূর্ণ লক্ষণ সুস্পষ্ট লক্ষিত হয়। কিন্তু এতদ্দেশীয় সংস্কৃতব্যবসায়িরা এমত সহৃদয় ও এমত রসজ্ঞ যে সংস্কৃতভাষার সর্ব্বপ্রধান মহাকাব্য রঘুবংশকে অতি সামান্য কাব্য জ্ঞান করিয়া থাকেন।

কুমারসম্ভব।

কালিদাসের দ্বিতীয় মহাকাব্য কুমারসম্ভব। কুমারসম্ভবও সর্ব্বাংশে রঘুবংশের তুল্য। এই মহাকাব্যের স্থূল বৃত্তান্ত এই; তারকনামে এক মহাবল পরাক্রান্ত অতিদুর্দ্দান্ত অসুর, ব্রহ্মদত্ত বর প্রভাবে অত্যন্ত গর্ব্বিত ও দুর্জ্জয় হইয়া, দেবতাদিগকে স্ব স্ব অধিকার হইতে চ্যুত করিয়া, স্বয়ং স্বর্গরাজ্য অধিকার করে। দেবতারা দুর্দ্দশাগ্রস্ত হইয়া ব্রহ্মার শরণাপন্ন হইলে, তিনি তাঁহাদিগকে এই বলিয়া আশ্বাস প্রদান করেন যে পার্ব্বতীর গর্ভে শিবের যে পুত্র জন্মিবেন তিনি তোমাদিগের সেনাপতি হইয়া, তারকাসুরের প্রাণ সংহার করিয়া, তোমাদিগকে পুনর্ব্বার স্ব স্ব অধিকার প্রদান করিবেন। তদনুসারে দেবতারা উদ্যোগী হইয়া হরগৌরীর পরিণয় সম্পাদন করিলে কার্ত্তিকেয়ের জন্ম হয়। অনন্তর, তিনি, দেবসৈন্য সমভিব্যাহারে সমরসাগরে অবতীর্ণ হইয়া, দুর্ব্বৃত্ত তারকাসুরের প্রাণসংহারপূর্ব্বক, দেবতাদিগকে আপন আপন অধিকারে পুনঃ স্থাপিত করেন। এই বৃত্তান্ত সুচারু রূপে কুমারসম্ভবে সবিস্তর বর্ণিত হইয়াছে।

কুমারসম্ভব সপ্তদশ সর্গে বিভক্ত। তন্মধ্যে প্রথম সাত সর্গেরই সর্ব্বত্র অনুশীলন আছে; অবশিষ্ট দশ সর্গ একবারে অপ্রচলিত ও বিলুপ্তপ্রায় হইয়া আসিয়াছে—এমত অপ্রচলিত যে ঐ দশ সর্গ

অদ্যাপি বিদ্যমান আছে বলিয়া অনেকেই অবগত নহেন। এই দশ সর্গ, কালিদাসের অলৌকিক কবিত্বশক্তির সম্পূর্ণ লক্ষণাক্রান্ত হইয়াও, যে এরূপ অপ্রচলিত ও অপরিজ্ঞাত হইয়া আছে তাহার হেতু এই বোধ হয়, অষ্টম সর্গে হরগৌরীর বিহার বর্ণনা আছে, তাহাও অত্যন্ত অশ্লীল ও সামান্য নায়ক নায়িকার ন্যায় বর্ণিত হইয়াছে। নবমে হরগৌরীর কৈলাস গমন এবং দশমে কার্ত্তিকেয়ের জন্ম বৃত্তান্ত বর্ণিত আছে। এই দুই সর্গেও হরগৌরীঘটিত অনেক অশ্লীল বর্ণনা দেখিতে পাওয়া যায়। ভারতবর্ষীয় লোকেরা হরগৌরীকে জগৎপিতা ও জগন্মাতা জ্ঞান করে। জগৎপিতা ও জগন্মাতা সংক্রান্ত অশ্লীল বর্ণনা পাঠ করা একান্ত অনুচিত বিবেচনা করিয়া, লোকে কুমারসম্ভবের শেষ দশ সর্গের অনুশীলন রহিত করিয়াছে। আলঙ্কারিকেরাও কুমারসম্ভবের হরগৌরীবিহারবর্ণনাকে অত্যন্ত অনুচিত ও অত্যন্ত দূষ্য বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন। একাদশ অবধি সপ্তদশ পর্য্যন্ত সাত সর্গে কার্ত্তিকেয়ের বাল্যলীলা, সৈনাপত্য গ্রহণ, তারকাসুরের সহিত সঙ্গ্রাম ও সেই সঙ্গ্রামে তারকাসুরের নিপাত এই সমস্ত বৃত্তান্ত সবিস্তর বর্ণিত হইয়াছে। এই সাত সর্গে অশ্লীল বর্ণনার লেশমাত্র নাই। কিন্তু অষ্টম, নবম, দশম, এই তিন সর্গের দোষে ইহারাও একবারে বিলুপ্তপ্রায় হইয়া আছে।

এরূপ কিম্বদন্তী আছে, এক কুম্ভকার কালিদাসের পরম মিত্র ছিল। কালিদাস কুমারসম্ভব রচনা করিয়া ঐ কুম্ভকার মিত্রকে দেখাইতে লইয়া যান। কুম্ভকার পাঠ করিয়া সম্মুখবর্ত্তি একখান কাঁচা সরার উপর রাখিয়া দেন। তাহাতে কালিদাস বোধ করিলেন এই গ্রন্থ কাঁচা হইয়াছে এবং সেই নিমিত্ত তিনি তৎক্ষণাৎ ঐ পুস্তক হস্তে লইয়া খণ্ড খণ্ড করিয়া ছিড়িয়া ফেলিলেন। কুম্ভকার তদ্দর্শনে সাতিশয় সঙ্কুচিত হইলেন এবং অশেষ প্রয়াসে প্রথম সাত সর্গ মাত্র সঙ্কলন করিতে পারিলেন; অবশিষ্ট দশ সর্গ বিলুপ্ত হইয়া গেল। এই অমূলক অকিঞ্চিৎকর কিম্বদন্তী অবলম্বন করিয়া, অনেকেই সিদ্ধান্ত করিয়া রাখিয়াছেন কুমারসম্ভবের প্রথম

সাত সর্গই বিদ্যমান আছে, অবশিষ্ট দশ সর্গ একবারে লোপ পাইয়াছে।

কুমারসম্ভবের যে শেষভাগের কথা উল্লিখিত হইল ইহার পুস্তক বাঙ্গালা দেশে পাওয়া যায় না। বাঙ্গালা দেশে কুমারসম্ভবের অন্যবিধ এক শেষভাগ আছে। এই শেষ ভাগ পাঠ করিলে ইহা স্পষ্ট প্রতীয়মান হয় যে কুমারসম্ভবের শেষ ভাগ বিলুপ্ত হইয়াছে ইহা স্থির করিয়া এতদ্দেশীয় কোন আধুনিক কবি ঐ অংশ রচনা করিয়া গিয়াছেন। উহা পাঠ করিলে কালিদাসের রচিত বলিয়া কোন ক্রমেই প্রতীতি জন্মিতে পারে না।

কুমারসম্ভবে যে বৃত্তান্ত বর্ণিত হইয়াছে শিবপুরাণে তাহা দেখিতে পাওয়া যায়। এই দুই গ্রন্থে, ইতিবৃত্তের যেরূপ ঐক্য আছে, দুই এক শ্লোকেরও সেইরূপ ঐক্য দেখিতে পাওয়া যায়।(১) যদি শিবপুরাণকে বেদব্যাসবিরচিত ও তদনুসারে কালিদাসের কুমারসম্ভব অপেক্ষা প্রাচীন গ্রন্থ বলিয়া অঙ্গীকার করা যায় তাহা হইলে ইহাও অবশ্য স্বীকার করিতে হয়,কালিদাস শিবপুরাণের বৃত্তান্ত লইয়া আপনকাব্য রচনা করিয়াছেন, এবং মধ্যে মধ্যে, ঐ গ্রন্থের শ্লোক অবিকল উদ্ধৃত করিয়া আপন কাব্যে নিবিষ্ট করিয়াছেন। কিন্তু কালিদাস অলৌকিককবিত্বশক্তিসম্পন্ন হইয়া যে আপনকাব্যে অন্যদীয় শ্লোক অবিকল উদ্ধৃত করিবেন ইহা কোন ক্রমেই সম্ভাবিত নহে। যে কয়েকটী শ্লোকে ঐক্য দৃষ্ট হইতেছে কুমারসম্ভবের অথবা কালিদাসের অন্যান্য গ্রন্থের রচনার সহিত সেই সেই শ্লোকের রচনার সম্পূর্ণ সৌসাদৃশ্য

(১) তদিচ্ছামি বিভো স্রষ্টুং সেনান্যং তস্য শান্তয়ে।
কর্ম্মবন্ধচ্ছিদং ধর্ম্মং ভবস্যেব মুমুক্ষবঃ॥
ষমোঽপি বিলিখন্ ভূমিং দণ্ডেনাস্তমিতত্বিষা।
বিষবৃক্ষোঽপি সংবর্দ্ধ্য স্বয়ং ছেত্তুমসাম্প্রতম্॥
শিবপুরাণ, উত্তরখণ্ড, চতুর্দ্দশ অধ্যায়।
কুমারসম্ভব, দ্বিতীয় সর্গ।

দৃশ্যমান হইতেছে; কিন্তু শিবপুরাণের কোন অংশের রচনার সহিত কোন অংশেই সাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া যায় না। বিশেষতঃ শিবপুরাণ কুমারসম্ভব অপেক্ষা প্রাচীন কি না এ বিষয়ে সম্পূর্ণ সংশয় আছে। যাবতীয় পুরাণ বেদব্যাস প্রণীত বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে। কিন্তু পুরাণ সকলের রচনা প্রণালী পরস্পর এত বিভিন্ন এবং এক বিষয় ভিন্ন ভিন্ন পুরাণে এরূপ বিভিন্ন প্রকারে সঙ্কলিত হইয়াছে যে এক ব্যক্তির রচিত বলিয়া কোন ক্রমেই বিশ্বাস হইতে পারে না। যাঁহাদের সংস্কৃত রচনার ইতরবিশেষ বিবেচনা করিবার শক্তি আছে, তাঁহারা নিরপেক্ষ হইয়া বিষ্ণুপুরাণ, ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ, ভাগবতপুরাণ প্রভৃতি পাঠ করিলে অনায়াসে বুঝিতে পারেন এই সকল গ্রন্থ এক লেখনীর মুখ হইতে বিনির্গত নয়। বাস্তবিক পুরাণ সকল এক ব্যক্তিরও রচিত নয়, এক কালেও রচিত নয়। বোধ হয়, বিষ্ণুপুরাণ ভিন্ন প্রায় কোন পুরাণই প্রাচীন নহে। সুতরাং শিবপুরাণ যে বিক্রমাদিত্যের সময়ের পূর্ব্বের রচিত গ্রন্থ, এবং তাহা দেখিয়া কালিদাস কুমারসম্ভব লিখিয়াছেন এবং তাহা হইতে অবিকল শ্লোক উদ্ধৃত করিয়া আপন কাব্যে নিবিষ্ট করিয়াছেন, পুরাণের উপর নিতান্ত ভক্তি না থাকিলে এরূপ বিশ্বাস হওয়া কঠিন; বরং বিপরীত পক্ষই বিলক্ষণ হৃদয়ঙ্গম হয়। যোগবাশিষ্ঠেও কুমারসম্ভবের এক শ্লোকের ঐক্য আছে। (২) কিন্তু যোগবাশিষ্ঠ যে আধুনিক গ্রন্থ, প্রাচীন ও ঋষিপ্রণীত নহে এ বিষয়ে কোন সংশয় হইতে পারে না।

(২) আকাশভবা সরস্বতী।
শফরীং হ্রদশোষবিক্লবাং
প্রথমা বৃষ্টিরিবান্বকম্পয়ৎ॥

যোগবাশিষ্ঠ, ভূকৈলাসবাসি রাজ শ্রীসত্যচরণ ঘোষাল বাহাদুরের মুদ্রিত পুস্তকের ১২৩ পৃষ্ঠ।
কুমারসম্ভব, চতুর্থ সর্গ।

কিরাতার্জ্জুনীয়।

রঘুবংশ ও কুমারসম্ভবের পর, সংস্কৃত মহাকাব্যের উল্লেখ করিতে হইলে, উৎকর্ষ ও প্রাথম্য অনুসারে, সর্ব্বাগ্রে কিরাতার্জ্জুনীয়ের নির্দ্দেশ করিতে হয়। এই মহাকাব্যের রচনা অতি প্রগাঢ়, কিন্তু কিঞ্চিৎ দুরূহ, কালিদাসের রচনার ন্যায় সরল নহে। রচনা প্রণালী দৃষ্টে স্পষ্ট বোধ হয়, কিরাতার্জ্জুনীয়কর্ত্তা ভারবি কালিদাসের উত্তর কালে, ও মাঘ, শ্রীহর্ষ প্রভৃতির বহুকাল পূর্ব্বে, প্রাদুর্ভূত হইয়াছিলেন।

কিরাতার্জ্জুনীয়ের স্থূল বৃত্তান্ত এই; যুধিষ্ঠিরাদি পঞ্চপাণ্ডব, রাজ্যাধিকার হইতে নিষ্কাশিত হইয়া, দ্বৈতবনে বাস করেন। এক দিবস ব্যাসদেব আসিয়া তাঁহাদিগকে কহেন, দৈব অনুগ্রহ ব্যতিরেকে তোমাদিগের নষ্ট রাজ্যের পুনরুদ্ধারের সম্ভাবনা নাই; অতএব অর্জ্জুন হিমালয়ে গিয়া ইন্দ্রের আরাধনা করুন। তদনুসারে অর্জ্জুন নির্দ্দিষ্ট স্থানে গিয়া দেবরাজের আরাধনা আরম্ভ করেন। দেবরাজ তদীয় আরাধনায় পরিতুষ্ট হইয়া তাঁহাকে শিবের আরাধনা করিতে পরামর্শ দেন। অর্জ্জুন শিবের আরাধনা আরম্ভ করিলে, মূক নামে এক দুর্ব্বৃত্ত দানব, বরাহের রূপ ধারণ করিয়া, তাঁহার প্রাণ সংহার করিতে আইসে। সেই সময়ে শিবও কিরাতরাজের আকার পরিগ্রহ করিয়া অর্জ্জুনের আশ্রমে উপস্থিত হন। অর্জ্জুন বরাহরূপী দানবের প্রাণদণ্ডার্থে শরাসনে শর সন্ধান করিয়াছেন, এমত সময়ে কিরাতরাজ এক শর নিক্ষেপ করিয়া বরাহের প্রাণসংহার করিলেন। এই উপলক্ষে কিরাতরাজের সহিত অর্জ্জুনের সংগ্রাম উপস্থিত হইল। সেই সংগ্রামে, অর্জ্জুনের অসাধারণ বল বীর্য্য দর্শনে যৎপরোনাস্তি প্রীত ও প্রসন্ন হইয়া, কিরাতরূপী মহাদেব তাঁহাকে ধনুর্ব্বেদ শিক্ষা করাইলেন। সেই শিক্ষা দ্বারা অর্জ্জুন অস্ত্রবিদ্যায় অদ্বিতীয় ও অপ্রতিহতপ্রভাব হইয়া উঠিলেন।

ভারবি কবিত্বশক্তি বিষয়ে কালিদাস অপেক্ষা ন্যূন বটেন; কিন্তু ভারতবর্ষের এক জন অতি প্রধান কবি ছিলেন, তাহার কোন সংশয় নাই। কোন্ সহৃদয় ব্যক্তি এই মহাকাব্যের প্রথম, দ্বিতীয়, তৃতীয়, চতুর্থ, ষষ্ঠ, একাদশ, দ্বাদশ, ত্রয়োদশ সর্গ পাঠ করিয়া সাতিশয় প্রীত ও চমৎকৃত না হন এবং পদে পদে অসাধারণ কবিত্বশক্তির সম্পূর্ণ প্রমাণ না পান। কিরাতার্জ্জুনীয় সপ্তদশ সর্গে বিভক্ত।

শিশুপালবধ।

এই কাব্যকর্ত্তা মাঘনামা কবি স্বগ্রন্থের শেষে লিখিয়াছেন "মাঘ কবিত্বকীর্ত্তি লাভের দুরাশাগ্রস্ত হইয়া এই শিশুপালবধ নামক কাব্যরচনা করিলেন"। মাঘ অতিপ্রধান কবি ছিলেন এবং তৎপ্রণীত শিশুপালবধও অতি প্রধান মহাকাব্য। এই মহাকাব্যের স্থূল বৃত্তান্ত এই; কৃষ্ণ, যুধিষ্ঠিরের রাজসূয় যজ্ঞে নিমন্ত্রিত হইয়া, সপরিবারে ইন্দ্রপ্রস্থ প্রস্থান করেন। যিনি সর্ব্বাংশে সর্ব্বশ্রেষ্ঠ হন তিনিই যজ্ঞে অর্ঘ পাইয়া থাকেন। যুধিষ্ঠির, রাজসূয় সমাপ্ত হইলে, ভীষ্মের উপদেশানুসারে কৃষ্ণকে সর্ব্বাংশে সর্ব্বশ্রেষ্ঠ স্থির করিয়া, অর্ঘ দান করেন। কৃষ্ণের পিতৃষ্বসৃপুত্র শিশুপাল তাঁহার অত্যন্ত বিদ্বেষী ছিলেন; তিনি, কৃষ্ণের এইরূপ অসামান্য সম্মান দর্শনে অসূয়াপরবশ হইয়া, ভীষ্মের যথোচিত তিরস্কার করিয়া, স্বপক্ষীয় নরপতিগণ সমভিব্যাহারে সভামণ্ডপ হইতে প্রস্থান করিলেন এবং দূত দ্বারা কৃষ্ণের অনেক তিরস্কার করিয়া পাঠাইলেন। অনন্তর উভয়পক্ষে ঘোরতর সংগ্রাম উপস্থিত হইল, এবং সেই সংগ্রামেই শিশুপাল প্রাণত্যাগ করিলেন।

এই মহাকাব্য কিরাতার্জ্জুনীয়ের প্রতিরূপ স্বরূপ। মাঘ কিরাতার্জ্জুনীয়কে আদর্শ স্বরূপ করিয়া শিশুপালবধ রচনা করিয়াছেন তাহার কোন সংশয় নাই। ভারবি যে প্রণালীতে কিরাতার্জ্জুনীয় রচনা করিয়াছেন; মাঘ শিশুপালবধ রচনা কালে

আদ্যোপান্ত সেই প্রণালী অবলম্বন করিয়াই চলিয়াছেন। কিরাতার্জ্জুনীয়ে, মহর্ষি ব্যাস আসিয়া পাণ্ডবদিগকে কর্ত্তব্য উপদেশ করিতেছেন; শিশুপালবধে, দেবর্ষি নারদ আসিয়া কৃষ্ণকে কর্ত্তব্য কর্ম্মের অনুষ্ঠানে উদ্যুক্ত করিতেছেন। কিরাতার্জ্জুনীয়ে, যুধিষ্ঠির, ভীম, দ্রৌপদী এই তিন জনের রাজনীতিসংক্রান্ত বাদানুবাদ; শিশুপালবধে, কৃষ্ণ, বলরাম ও উদ্ধবেরও সেইরূপ রাজনীতিসংক্রান্ত বাদানুবাদ। কিরাতার্জুনীয়ে, অর্জ্জুনের তপস্যার্থে হিমালয় পর্ব্বতে অবস্থান; শিশুপালবধে, কৃষ্ণের ইন্দ্রপ্রস্থ প্রস্থান কালে রৈবতক পর্ব্বতে অবস্থান। কিরাতার্জুনীয়ে, হিমালয় পর্ব্বতের বহুবিস্তৃত বর্ণনা এবং বর্ণনার শ্লোক সকল অধিকাংশ যমকালঙ্কারযুক্ত; শিশুপালবধে, রৈবতক পর্ব্বতেরও অবিকল সেইরূপ বর্ণনা ও সেইরূপ যমকালঙ্কৃত শ্লোক। কিরাতার্জুনীয়ে, সুরাঙ্গনাদিগের বনবিহার, জলবিহার, নায়কসমাগম, বিরহ, মান প্রভৃতির বর্ণনা আছে; শিশুপালবধেও, অবিকল সেই সমস্ত বর্ণনা আছে। কিরাতার্জুনীয়ে, কিরাতরাজ অর্জুনের উত্তেজনার্থে তাঁহার নিকট দূত প্রেরণ করেন; শিশুপালবধেও, শিশুপাল কৃষ্ণের ভৎর্সনার্থে তাঁহার নিকট দূত প্রেরণ করেন। অনন্তর উভয় কাব্যেই উভয় পক্ষের সৈন্যসজ্জা, সৈন্যপ্রয়াণ ও সংগ্রামবর্ণনা আছে। কিরাতার্জ্জুনীয়ের পঞ্চদশ সর্গে যুদ্ধবর্ণন ও একাক্ষর, দ্ব্যক্ষর, যমক প্রভৃতি শ্লোকই অনেক; শিশুপালবধেরও উনবিংশ সর্গে যুদ্ধবর্ণন ও ঐরূপ একাক্ষর, দ্ব্যক্ষর, যমক প্রভৃতি শ্লোক অনেক আছে। কিরাতার্জ্জুনীয়ে, প্রতি সর্গের শেষ শ্লোকে সর্গসমাপ্তিসূচক লক্ষ্মীশব্দ প্রয়োগ আছে; শিশুপালবধেও, প্রতি সর্গের শেষ শ্লোকে সর্গসমাপ্তিসূচক শ্রীশব্দ প্রয়োগ আছে। কোন স্থলে ইহাও দেখিতে পাওয়া যায় শিশুপালবধে কিরাতার্জ্জুনীয়ের ভাব অবিকল ভিন্ন ছন্দে সঙ্কলিত হইয়াছে। এ প্রযুক্ত, অভিনিবেশ পূর্ব্বক উভয় কাব্য আদ্যন্ত পাঠ করিলে, ইহা বিলক্ষণ প্রতীয়মান হয়, কিরাতার্জ্জুনীয় আদর্শ ও শিশুপালবধ তৎপ্রতিরূপ। উভয় কাব্যের রচনা প্রণালী আলোচনা করিয়া

দেখিলে, বিপরীত পক্ষ কোন ক্রমেই হৃদয়ঙ্গম হয় না। কিরাতার্জ্জুনীয় যে শিশুপালবধ অপেক্ষা প্রাচীন গ্রন্থ ইহাতে সংশয় হইবার বিষয় নাই।

মাঘ অতি অদ্ভুত কবিত্বশক্তি ও অতি অদ্ভুত বর্ণনা শক্তি পাইয়াছিলেন, যদি তাঁহার, কালিদাস ও ভারবির ন্যায়, সহৃদয়তা থাকিত তাহা হইলে তাঁহার শিশুপালবধ সংস্কৃতভাষায় সর্ব্বপ্রধান মহাকাব্য হইত, সন্দেহ নাই। তিনি সকল বিষয়েরই বহুবিস্তৃত বর্ণনা করিয়াছেন। বর্ণনা সকল আরম্ভে একান্তমনোহর কিন্তু পরিণামে নিতান্তনীরস। মাঘ অধিক বর্ণনা এত অধিক ভাল বাসিতেন যে শেষাংশ নিতান্ত অশক্তিকৃত হইতেছে দেখিয়াও ক্ষান্ত হইতে পারিতেন না। কখন কখন ইহাও দেখিতে পাওয়া যায় একটী শ্লিষ্ট অথবা সুশ্রাব্য শব্দের অনুরোধে একটা শ্লোক রচনা করিয়াছেন। সেই শ্লোকের সেই শব্দটী ভিন্ন আর কোন অংশেই কোন চমৎকারিতা দেখিতে পাওয়া যায় না। তাঁহার রচনা প্রগাঢ়, ওজস্বি এবং মাধুর্য্য ও গাম্ভীর্য্য ব্যঞ্জক, কিন্তু কালিদাসের অথবা ভারবির রচনার ন্যায় পরিপক্ক নহে।

অপ্রাসঙ্গিক বিষয়ের বহুবিস্তৃত বর্ণনা মাঘের অতিপ্রধান দোষ। তিনি বিংশতি সর্গাত্মক কাব্যের নয় সর্গ অপ্রাসঙ্গিক বিষয়ে সমর্পিত করিয়াছেন। কৃষ্ণ ইন্দ্রপ্রস্থ প্রস্থান কালে প্রথম দিন রৈবতক পর্ব্বতে অবস্থান করেন। এই উপলক্ষে মাঘ রৈবতক প্রভৃতির অত্যন্ত অধিক বর্ণনা করিয়াছেন। চতুর্থ সর্গে কেবল রৈবতক বর্ণন, পঞ্চমে শিবিরসন্নিবেশ, ষষ্ঠে ঋতুবর্ণন, সপ্তমে যাদবদিগের বনবিহার, অষ্টমে জলবিহার, নবমে সন্ধ্যাবর্ণন, দশমে সস্ত্রীক যাদবদিগের সুরাপান ও বিহার, একাদশে প্রভাতবর্ণন, দ্বাদশে সৈন্যপ্রয়াণ; এইরূপ এক এক সর্গে এক এক বিষয় মাত্র বর্ণিত হইয়াছে। মাঘ এই সমস্ত বর্ণনাতে স্বীয় অদ্ভুত কবিত্বশক্তি ও বর্ণনাশক্তির একশেষ প্রদর্শন করিয়াছেন। কিন্তু এই সকল বর্ণনা যেমন অতিবিস্তৃত তেমনি অপ্রাসঙ্গিক;

182 MC 853 · 4

প্রকৃতবিষয়ে শিশুপালবধে উহাদের কোন উপযোগিতা দেখিতে পাওয়া যায় না। এই নয় সর্গ পরিত্যাগ করিলেও কাব্যের ইতিবৃত্ত কোন ক্রমেই অসংলগ্ন হইবেক না।

শিশুপালবধ এইরূপ দোষাশ্রিত হইয়াও, যে এক অত্যুৎকৃষ্ট মহাকাব্য তাহার সন্দেহ নাই। কিন্তু ভারতবর্ষীয় পণ্ডিতেরা যে ইহাকে সর্ব্বোৎকৃষ্ট মহাকাব্য বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়া থাকেন ইহা কোন ক্রমেই অঙ্গীকার করিতে পারা যায় না।(৩) সম্যক্ সহৃদয়তা সহকারে পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলে, ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে হইবেক যে শিশুপালবধ রঘুবংশ, কুমারসম্ভব ও কিরাতার্জুনীয় অপেক্ষা অনেক নিকৃষ্ট।

নৈষধচরিত।

এরূপ কিম্বদন্তী আছে, শ্রীহর্ষ দেবতার আরাধনা করিয়া তৎপ্রসাদে অলৌকিক কবিত্বশক্তি লাভ করিয়াছিলেন। নৈষধচরিত সেই দেবপ্রসাদলব্ধ অলৌকিক কবিত্বশক্তির ফল। শ্রীহর্ষের যে কবিত্ব শক্তি অসাধারণ ছিল তাহার কোন সংশয় নাই। কিন্তু তাঁহার তাদৃশী সহৃদয়তা ছিল না। তিনি নৈষধচরিতকে আদ্যোপান্ত অত্যুক্তিতে এমত পরিপূর্ণ করিয়াছেন, এবং তাঁহার চরনা এমত মাধুর্য্যবর্জ্জিত, লালিত্যহীন, সারল্যশূন্য ও অপরিপক্ক যে ইহাকে কোন ক্রমেই অত্যুৎকৃষ্ট কাব্য বলিয়া নির্দ্দেশ, অথবা পূর্ব্বোল্লিখিত মহাকাব্যচতুষ্টয়ের সহিত তুলনা, করিতে পারা যায় না।

শ্রীহর্ষের অত্যুক্তি এমত উৎকট যে তদ্দ্বারা তদীয় কাব্যের উপাদেয়ত্ব না জন্মিয়া বরং হেয়ত্বই জন্মিয়াছে। তিনি নলরাজার বর্ণনা কালে কহিয়াছেন "নলরাজার যুদ্ধযাত্রা কালে সৈন্য দ্বারা যে ধূলি উত্থাপিত হইয়াছিল; সেই ধূলি ক্ষীরসমুদ্রে পতিত হইয়া পঙ্কভাব

(৩) উপমা কালিদাসস্য ভারবেরর্থগৌরবম্।
নৈষধে পদলালিত্যং মাঘে সন্তি ত্রয়ো গুণাঃ॥

প্রাপ্ত হয়; উৎপত্তিকালে চন্দ্রের গাত্রে সেই পঙ্ক লাগিয়া কলঙ্ক হইয়া আছে”।(৪) নলরাজা যখন অশ্বারোহণ করিয়া বয়স্যবর্গসমভিব্যাহারে উপবনবিহারে গমন করিতেছেন তখন শ্রীহর্ষ তদীয় অশ্বের এইরূপ বর্ণনা করিয়াছেন “আমাদিগের চলিবার নিমিত্ত এই পৃথিবী কয় পদ হইবেক; অতএব সমুদ্রও স্থল হউক; এই মনে করিয়াই যেন অশ্বগণ, সমুদ্রের জল শুষ্ক করিয়া স্থল করিবার নিমিত্ত, পদ দ্বারা ধূলি উত্থাপিত করিতেছে”।(৫) নৈষধচরিত এইরূপ উৎকট বর্ণনায় পরিপূর্ণ। এরূপ উৎকট বর্ণনা পাঠ করিয়া কোন্ সহৃদয় ব্যক্তি প্রীত বা চমৎকৃত হইবেন।

শ্রীহর্ষ অত্যন্ত অনুপ্রাসপ্রিয় ছিলেন। সংস্কৃতভাষায় অনুপ্রাস সাতিশয় মধুর হইয়া থাকে; কিন্তু অত্যন্ত অধিক হইলে অত্যন্ত কর্কশ হইয়া উঠে। সুতরাং অনুপ্রাসবাহুল্য দ্বারা নৈষধচরিতের মাধুর্য্য না জন্মিয়া সাতিশয় কার্কশ্যই ঘটিয়া উঠিয়াছে। কিন্তু এতদ্দেশীয় লোকেরা, বিশেষতঃ নৈয়ায়িক মহাশয়েরা, এমত অত্যুক্তিপ্রিয় ও অনুপ্রাসভক্ত যে তাঁহারা সকল কাব্য অপেক্ষা নৈষধচরিতের সমধিক প্রশংসা করিয়া থাকেন। তাঁহাদের মতে নৈষধচরিত সংস্কৃত ভাষায় সর্ব্বপ্রধান মহাকাব্য।(৬) যাহা হউক, নৈষধচরিতের স্থানে স্থানে অনেক অত্যুৎকৃষ্ট অংশ আছে। অন্য অন্য অংশ পাঠ করিয়া যেরূপ অসন্তুষ্ট ও বিরক্ত হইতে হয় ঐ সকল অত্যুৎকৃষ্ট অংশ পাঠ করিয়া সেইরূপ প্রীত ও চমৎকৃত হইতে হয়।

(৪) यदस्य यात्रासु बलोद्धतं रजः स्फुरत्प्रतापानलधूममञ्जिम ।
तदेव गत्वा पतितं सुधाम्बुधौ दधाति पङ्कीभवदङ्कतां विधौ ॥
প্রথমসর্গ। ৮ শ্লোক।

(৫) प्रयातुमस्माकमियं कियत्पदं धरा तदम्भोधिरपि स्थलायताम् ।
इतीव वाहैर्निजवेगदर्पितैः पयोधिरोधक्षममुद्धृतं रजः ॥
প্রথমসর্গ। ৬৯ শ্লোক।

(৬) उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः ।

এই মহাকাব্য দ্বাবিংশতি সর্গে বিভক্ত, এবং সকল মহাকাব্য অপেক্ষা বৃহৎ। ইহাতে নলরাজার চরিত্র বর্ণিত হইয়াছে।

নৈষধচরিতের বিষয়ে এক অতিকৌতুকাবহ কিম্বদন্তী প্রচলিত আছে। শ্রীহর্ষ নৈষধচরিত রচনা করিয়া স্বীয় মাতুল প্রধান আলঙ্কারিক মম্মট ভট্টকে দেখাইতে লইয়া যান। মম্মট ভট্ট আদ্যোপান্ত পাঠ করিয়া শ্রীহর্ষকে কহিয়াছিলেন, বাপু হে! যদি তুমি কিছু পূর্ব্বে তোমার গ্রন্থ খানি আনিতে, তাহা হইলে আমার শ্রমের বিস্তর লাঘব হইত। অনেক পরিশ্রমে অনেক গ্রন্থ পাঠ করিয়া আমার অলঙ্কার গ্রন্থের দোষপরিচ্ছেদের উদাহরণ সংগ্রহ করিতে হইয়াছে। কিন্তু সেই সময় তোমার নৈষধচরিত পাইলে আমাকে এত পরিশ্রম করিতে হইত না। এক গ্রন্থ হইতেই সমুদায় উদাহরণ উদ্ধৃত করিতে পারিতাম।

ভট্টিকাব্য।

ভট্টিকাব্যে রামের চরিত্র বর্ণিত হইয়াছে। এই মহাকাব্য দ্বাবিংশতি সর্গে বিভক্ত। গ্রন্থকর্ত্তা স্বরচিত কাব্যের শেষে আপনার এক প্রকার পরিচয় দিয়াছেন, কিন্তু নাম নির্দ্দেশ করেন নাই। প্রামাণিক প্রাচীন টীকাকার জয়মঙ্গল কহেন, এই মহাকাব্য ভট্টনামক কবির রচিত। এবং ভট্টিকাব্য নাম দ্বারাও ইহাই সম্যক্ প্রতিপন্ন হইতেছে। কিন্তু অধুনাতন টীকাকার ভরতমল্লিক, আপন মতের প্রতিপোষক প্রমাণ প্রদর্শন ব্যতিরেকেই, ভট্টিকাব্যকে ভর্তৃহরিপ্রণীত বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন। ভর্তৃহরি ও এই কাব্যের রচয়িতা উভয়েই অতি প্রধান বৈয়াকরণ ছিলেন, বোধ হয় এই সাদৃশ্য দর্শনেই ভরতমল্লিকের ভ্রান্তি জন্মিয়াছিল। গ্রন্থকর্ত্তা কাব্যের শেষ শ্লোকে লিখিয়াছেন আমি বলভীপতি নরেন্দ্র রাজার রাজধানীতে থাকিয়া এই কাব্য রচনা করিলাম। যদি ভরতমল্লিক এই শ্লোক দেখিতেন তাহা হইলে তিনি ঐ ভ্রমে পতিত হইতেন না। যেরূপ জনশ্রুতি আছে তদনুসারে ভর্তৃহরি স্বয়ং রাজা

ছিলেন। যে ব্যক্তি স্বয়ং রাজা হয় সে, অমুকরাজার রাজধানীতে থাকিয়া এই গ্রন্থ রচনা করিলাম, আপন গ্রন্থে কদাচ এরূপ নির্দ্দেশ করে না। ভরতমল্লিক শেষ চারি শ্লোকের টীকা করেন নাই। তাহাতেই বোধ হইতেছে এই চারি শ্লোক তাঁহার দৃষ্টিপথে পতিত হয় নাই।

ভট্টিকাব্যের রচনা স্থানে স্থানে অতি সুন্দর। বিশেষতঃ, দ্বিতীয় সর্গের প্রারম্ভে যে শরদ্বর্ণনা আছে তাহা এমত মনোহর যে তদ্দ্বারা গ্রন্থকর্ত্তার অসাধারণ কবিত্বশক্তির বিলক্ষণ প্রমাণ পাওয়া যাইতেছে। কিন্তু ব্যাকরণের উদাহরণপ্রদর্শন গ্রন্থকর্ত্তার যেরূপ উদ্দেশ্য ছিল, কবিত্বশক্তি প্রদর্শন করা তাদৃশ উদ্দেশ্য ছিল না। এই নিমিত্তই ভট্টিকাব্যের অধিকাংশ অত্যন্ত নীরস ও অত্যন্ত কর্কশ। যদি তিনি, ব্যাকরণের উদাহরণপ্রদর্শনে ব্যগ্র না হইয়া, কাব্যরচনায় মনোনিবেশ করিতেন, তাহা হইলে ভট্টিকাব্য উৎকৃষ্ট মহাকাব্য মধ্যে পরিগণিত হইতে পারিত তাহার সন্দেহ নাই।

এই যে ছয় মহাকাব্যের বিষয় উল্লিখিত হইল ইহারাই অত্যন্ত প্রসিদ্ধ ও অত্যন্ত প্রচলিত। ভারতবর্ষের সর্ব্বপ্রদেশেই এই ছয়ের সচরাচর অনুশীলন আছে।

রাঘবপাণ্ডবীয়।

এই মহাকাব্যের প্রণালী স্বতন্ত্র। ইহা দ্ব্যর্থ কাব্য। এক অর্থে রামের চরিত্র বর্ণন প্রতিপন্ন হয়, অপর অর্থে যুধিষ্ঠিরাদি পঞ্চ পাণ্ডবের বৃত্তান্ত বর্ণন লক্ষিত হয়। এইরূপ এক শ্লোকে অর্থদ্বয় সমাবেশ দ্বারা রাঘব ও পাণ্ডবদিগের বৃত্তান্তবর্ণন সমাধান করিয়া, কবি স্বীয় অসাধারণ ক্ষমতা প্রদর্শন করিয়াছেন। রাঘবপাণ্ডবীয়ের উপক্রমণিকাংশে গ্রন্থকর্ত্তার নাম কবিরাজপণ্ডিত বলিয়া নির্দ্দিষ্ট আছে। কিন্তু বোধ হয়, ইহা তাঁহার উপাধি, নাম নহে। উপাধি দ্বারাই বিশেষ বিখ্যাত ছিলেন এই নিমিত্ত গ্রন্থকর্ত্তা আপন গ্রন্থে উপাধিরই নির্দ্দেশ করিয়াছেন। কবি যেরূপ উপাধি অথবা নাম

পাইয়াছিলেন তদনুরূপ কবিত্বশক্তি প্রাপ্ত হন নাই। ইনি কবিত্ব অংশে পূর্ব্বনির্দ্দিষ্ট কবিদিগের অপেক্ষা অনেক ন্যূন। এই কাব্য ত্রয়োদশ সর্গে বিভক্ত। পূর্ব্বোক্ত কাব্য সকল যেমন সর্ব্বত্র প্রচলিত, রাঘবপাণ্ডবীয় সেরূপ নহে। ইহা অত্যন্ত বিরলপ্রচার। অনেকে ইহার নামও অবগত নহেন। কবিরাজ স্বগ্রন্থে নির্দ্দেশ করিয়াছেন তিনি কামদেব রাজার সভায় ছিলেন এবং তাঁহাকর্ত্তৃক প্রোৎসাহিত হইয়া রাঘবপাণ্ডবীয় রচনা করেন। কামদেব জয়ন্তীপুরের রাজা ছিলেন এবং মধ্যদেশ হইতে সোমপায়ি বেদজ্ঞ ব্রাহ্মণ আনাইয়াছিলেন। ইহা দেখিয়া অনেকে বোধ করেন কামদেবেরই অপর নাম আদিশূর। আদিশূরেরও মধ্যদেশ হইতে বেদজ্ঞ ব্রাহ্মণ আনয়নের কিম্বদন্তী আছে।

গীতগোবিন্দ।

গীতগোবিন্দ জয়দেবপ্রণীত। এই মহাকাব্যের রচনা যেরূপ মধুর, কোমল ও মনোহর, সংস্কৃত ভাষায় সেরূপ রচনা অতি অল্প দেখিতে পাওয়া যায়। বস্তুতঃ এরূপ ললিতপদবিন্যাস, শ্রবণমনোহর অনুপ্রাসচ্ছটা ও প্রসাদগুণ প্রায় কুত্রাপি লক্ষিত হয় না। তাঁহার রচনা যেরূপ চমৎকারিণী বর্ণনাও তদ্রূপ মনোহারিণী। জয়দেব রচনা বিষয়ে যেরূপ অসামান্য নৈপুণ্য প্রদর্শন করিয়াছেন যদি তাঁহার কবিত্বশক্তি তদনুযায়িনী হইত তাহা হইলে তাঁহার গীতগোবিন্দ এক অপূর্ব্ব মহাকাব্য বলিয়া পরিগণিত হইত। জয়দেব কালিদাস ভবভূতি প্রভৃতি হইতে অনেক ন্যূন বটেন কিন্তু তাঁহার কবিত্বশক্তি নিতান্ত সামান্য নহে। বোধ হয়, বাঙ্গালা দেশে য[illegible] সংস্কৃত কবি প্রাদুর্ভূত হইয়াছেন, ইনিই সর্ব্বোৎকৃষ্ট।

গীতগোবিন্দ আদ্যোপান্ত সঙ্গীতময় কেবল মধ্যে মধ[illegible] আছে। সঙ্গীত সমূহে রাগ তানের বিলক্ষণ সমাবেশ আ[illegible] অনেক কলাবতেরা, ভাষাসঙ্গীতের ন্যায়, গীতগোবিন্দ [illegible] থাকেন। গীতগোবিন্দে রাধাকৃষ্ণের লীলা বর্ণিত হই[illegible]

দেব পরম বৈষ্ণব ছিলেন এবং প্রগাঢ় ভক্তিযোগ সহকারে বৈষ্ণবদিগের পরম দেবতা রাধা কৃষ্ণের লীলা বর্ণন করিয়াছেন।

এরূপ কিম্বদন্তী আছে, এবং বৈষ্ণব সম্প্রদায়ের লোকেরা অদ্যাপি বিশ্বাস করিয়া থাকেন, যে গীতগোবিন্দের "দেহি পদপল্লবমুদারম্" এই অংশটী কৃষ্ণ আসিয়া স্বহস্তে লিখিয়া গিয়াছেন। রাধার মানভঞ্জনার্থে যখন কৃষ্ণ অনুনয় করিতেছেন সেই স্থলে, "মম শিরসি মণ্ডনং, দেহি পদপল্লবমুদারম্" এই বাক্য লিখিত আছে। ইহার অর্থ এই, (কৃষ্ণ রাধিকাকে কহিতেছেন) তোমার এই উদার পদপল্লব আমার মস্তকে ভূষণস্বরূপ অর্পণ কর। জয়দেব "মণ্ডনং" পর্য্যন্ত লিখিয়া, এই ভাবিয়া "দেহি পদপল্লবমুদারম্" এই অংশ সাহস করিয়া লিখিতে পারিতেছেন না, যে প্রভুর মস্তকে পদার্পণের কথা কিরূপে লিখিব। পরিশেষে, ঐ অংশ লিখিতে কোন ক্রমেই সাহস না হওয়াতে, সে দিবস লেখা রহিত করিয়া স্নানে গমন করিলেন। কিন্তু কৃষ্ণ অত্যন্ত রসিক, সামান্য নায়কের ন্যায় বর্ণিত হইলে, অপরাধ গ্রহণ করেন এরূপ নহেন; বরং তাঁহার প্রণয়িনীর পদপল্লব তদীয়মস্তকে অর্পিত বর্ণন করিলে, প্রসন্নই হয়েন। অতএব তিনি, প্রস্তুত বিষয়ে স্বীয় পরিতোষ দর্শাইবার এবং পরমভাগবত জয়দেবকে চরিতার্থ করিবার নিমিত্ত, জয়দেবের স্নানোত্তর প্রত্যাগমনের কিঞ্চিৎ পূর্ব্বে, তদীয় আকার অবলম্বন করিয়া, স্নাতপ্রত্যাগত জয়দেবের ন্যায়, গৃহে উপস্থিত হইলেন। জয়দেবের ব্রাহ্মণী পদ্মাবতী রীতিমত অন্ন ব্যঞ্জন প্রস্তুত করিয়া দিলেন। জয়দেবরূপী কৃষ্ণ সেই অন্ন ব্যঞ্জন আহার করিলেন এবং াহারান্তে জয়দেবের পুস্তক বহিষ্কৃত করিয়া "দেহি পদপল্লব- ম" এই অংশ স্বহস্তে লিখিয়া রাখিলেন। অনন্তর পদ্মাবতী, ত করিয়া তাঁহাকে শয়ন করাইয়া, রীতিমত তদীয় পাত্রা- াদ পাইতে বসিলেন। এই অবসরে প্রকৃত জয়দেবও গৃহ প্রত্যাগমন করিলেন। জয়দেব জানিতেন, পদ্মা- ন পাত্রাবশিষ্ট প্রসাদ পাইয়া থাকেন, প্রাণান্তেও

কদাপি তাঁহার আহারের পূর্ব্বে জলগ্রহণ করেন না। সে দিবস তাঁহাকে অগ্রে আহারে প্রবৃত্ত দেখিয়া চমৎকৃত হইয়া হেতু জিজ্ঞাসা করিলে, তিনি পূর্ব্বাপর সমস্ত ব্যাপার বর্ণন করিলেন। জয়দেব, যৎপরোনাস্তি বিস্ময়াপন্ন হইয়া, পুস্তক উদ্ঘাটন করিয়া, দেখিলেন "দেহি পদপল্লবমুদারম্" এই অংশ লিখিত রহিয়াছে। তখন বুঝিতে পারিলেন ভক্তবৎসল ভগবান্ স্বয়ং আসিয়া লিখিয়া গিয়াছেন। পরে শয়নাগারে প্রবেশ করিয়া দেখিলেন, শয্যা পাতিত আছে, প্রভু অন্তর্হিত হইয়াছেন। তখন, আপনাকে যৎপরোনাস্তি ভাগ্যবান্ ও প্রভুর অসাধারণ কৃপাপাত্র স্থির করিয়া, প্রভুর প্রসাদ বলিয়া পদ্মাবতীর পাত্রাবশিষ্ট গ্রহণ দ্বারা আত্মাকে চরিতার্থ করিলেন।

কেন্দুবিল্ব গ্রামে জয়দেবের বাস ছিল (৭)। বীরভূমির প্রায় দশ ক্রোশ দক্ষিণে, অজয়নদের উত্তরতীরে, কেন্দুলি নামে যে গ্রাম আছে জয়দেব তাহাকেই কেন্দুবিল্বনামে নির্দ্দেশ করিয়াছেন। ঐ কেন্দুলি গ্রামে অদ্যাপি,জয়দেবের স্মরণার্থে, প্রতিবৎসর পৌষমাসে বৈষ্ণবদিগের মেলা হইয়া থাকে। জয়দেব কোন্ সময়ে প্রাচুর্ভূত হইয়াছিলেন তাহার নিশ্চয় হওয়া দুর্ঘট।

খণ্ডকাব্য।

কোন এক বিষয়ের উপর লিখিত অনতিদীর্ঘ যে কাব্য, আলঙ্কারিকেরা তাহাকে খণ্ডকাব্য বলেন। খণ্ডকাব্য মহাকাব্যের প্রণালীতে রচিত কিন্তু মহাকাব্যের সম্পূর্ণ লক্ষণাক্রান্ত নহে। কোন কোন খণ্ডকাব্য মহাকাব্যের ন্যায় সর্গবন্ধে বিভক্ত নয়। আর যে সকল খণ্ডকাব্য সর্গবন্ধে বিভক্ত তাহাতেও সর্গসংখ্যা আটের অধিক নহে।

(৭)বর্ণিতং জয়দেবকেন হরেরিদং প্রবণেন।
কেন্দুবিল্বসমুদ্রসম্ভবরোহিণীরমণেন॥
গীতগোবিন্দ, তৃতীয়সর্গ।

মেঘদূত।

সংস্কৃত ভাষায় যত খণ্ডকাব্য আছে মেঘদূত সর্ব্বাংশে সর্ব্বোৎকৃষ্ট। এই অষ্টাদশাধিক শতশ্লোকাত্মক খণ্ডকাব্য কালিদাসপ্রণীত। মেঘদূত এইরূপ ক্ষুদ্র কাব্য বটে, কিন্তু ইহার প্রায় প্রত্যেক শ্লোকেই অদ্বিতীয় কবি কালিদাসের অলৌকিক কবিত্বশক্তির সম্পূর্ণ লক্ষণ সুস্পষ্ট লক্ষিত হয়।

কুবেরের ভৃত্য এক যক্ষ, অত্যন্ত স্ত্রৈণতাপ্রযুক্ত, আপন কর্ম্মে অবহেলা করাতে, কুবের তাহাকে এই শাপ দেন যে তোমাকে একাকী এক বৎসর রামগিরিতে অবস্থিতি করিতে হইবেক। তদনুসারে সে তথায় আট মাস বাস করিয়া স্বীয় প্রিয়তমার অদর্শন দুঃখে উন্মত্তপ্রায় হয়। পরিশেষে, আষাঢ়ের প্রথম দিবসে, নভোমণ্ডলে নূতন মেঘের উদয় দেখিয়া বাহ্যজ্ঞানশূন্য হইল এবং, আপন প্রিয়ার নিকট সংবাদ লইয়া যাইবার নিমিত্ত, মেঘকে সচেতন বোধে সম্বোধন করিয়া, দৌত্যভারগ্রহণ প্রার্থনা জানাইল, এবং রামগিরি হইতে আপন আলয় পর্য্যন্ত পথ নির্দ্দেশ করিয়া দিতে আরম্ভ করিল। এই বিষয় অতি সুচারুরূপে মেঘদূতে বর্ণিত হইয়াছে।

কালিদাস এই কাব্যে নানা গিরি, নদী, উপবন, গ্রাম, নগর, ক্ষেত্র, দেবালয় ও রাজধানী এবং হিমালয়, অলকা, যক্ষের আলয়, যক্ষের ও যক্ষপত্নীর বিরহাবস্থা প্রভৃতির বর্ণন করিয়াছেন। ঐ সমস্ত বর্ণনে এমত অসাধারণ কবিত্বশক্তি ও অনন্যসামান্য সহৃদয়তা প্রদর্শিত হইয়াছে যে যদি কালিদাস মেঘদূত ব্যতিরিক্ত অন্য কোন কাব্য রচনা না করিতেন, তথাপি তাঁহাকে অদ্বিতীয় কবি বলিয়া অঙ্গীকার করিতে হইত। মেঘদূতের রচনা কালিদাসের অন্যান্য কাব্যের রচনা অপেক্ষা কিঞ্চিৎ দুরূহ।

ঋতুসংহার।

কালিদাসপ্রণীত এই খণ্ডকাব্য ছয় সর্গে বিভক্ত। এক এক সর্গে যথাক্রমে গ্রীষ্ম, বর্ষা, শরৎ, হিম, শিশির, বসন্ত ছয় ঋতু বর্ণিত হইয়াছে। যে স্বভাবোক্তি কাব্যের প্রধান অলঙ্কার, ঋতুসংহার প্রায় আদ্যোপান্ত তাহাতে অলঙ্কৃত। কিন্তু রূপক, উৎপ্রেক্ষা প্রভৃতি অলঙ্কার এতদ্দেশীয় লোকের অধিক প্রিয়, স্বভাবোক্তির চমৎকারিত্ব তাঁহাদের তাদৃশ মনোরম বোধ হয় না। এই নিমিত্ত অনেকেই ইহাকে উৎকৃষ্ট কাব্য বলেন না। কেহ কেহ ঋতুসংহারকে রঘুবংশ, কুমারসম্ভব, মেঘদূত, অভিজ্ঞানশকুন্তল, বিক্রমোর্ব্বশী এই সকল সর্ব্বোৎকৃষ্ট কাব্যের রচয়িতা কালিদাসের প্রণীত বলিয়া অঙ্গীকার করিতে সম্মত নহেন। ঋতুসংহার রঘুবংশাদি অপেক্ষা অনেক অংশে ন্যূন বটে। কিন্তু যে সমস্ত গুণ থাকাতে রঘুবংশাদির এত আদর ও এত গৌরব, কুসংস্কারবিবর্জিত ও সহৃদয়পদবীতে অধিরূঢ় হইয়া অভিনিবেশপূর্ব্বক পাঠ করিলে, ঋতুসংহারে সেই সমস্ত গুণের সমুদায় লক্ষণ সুস্পষ্ট লক্ষিত হয়। অন্যান্য অপেক্ষা গ্রীষ্ম ঋতুর বর্ণন সাতিশয় মনোহর।

নলোদয়।

নলোদয়ের প্রত্যেক শ্লোক যমকালঙ্কারযুক্ত। এই কাব্য কালিদাস প্রণীত। ইহাতে নলরাজার বৃত্তান্ত সঙ্ক্ষেপে বর্ণিত হইয়াছে। কালিদাস, যমকের দিকেই সম্পূর্ণ দৃষ্টি রাখাতে, স্বপ্রণীত অন্যান্য কাব্যের ন্যায়, নলোদয়কে স্বীয় অলৌকিক কবিত্বশক্তির লক্ষণে লক্ষিত করিবার অবকাশ পান নাই।

এরূপ কিম্বদন্তী আছে, কালিদাস ঘটকর্পরের গর্ব্ব খর্ব্ব করিবার নিমিত্ত নলোদয় রচনা করেন। ঘটকর্পরও কালিদাসের ন্যায় বিক্রমাদিত্যের নবরত্নের অন্তর্ব্বর্ত্তী। ইনি যমকালঙ্কারযুক্ত দ্বাবিংশতি শ্লোক রচনা করেন। এই দ্বাবিংশতি শ্লোকাত্মক কাব্যও

ঘটকর্পর নামে প্রসিদ্ধ। ঘটকর্পরের বিশেষ প্রশংসা করা যায় এমত কোন গুণ নাই। গ্রন্থকর্ত্তা শেষ শ্লোকে কহিয়াছেন "যে কবি যমক লিখিয়া আমাকে পরাজয় করিতে পারিবেক আমি ঘটকর্পর অর্থাৎ কলসীর খাপরা দ্বারা তাহার বারিবহন করিব"।(৮) কবির এই প্রতিজ্ঞা বাক্য দর্শনে এক প্রকার স্পষ্ট বোধ হইতেছে, ঘটকর্পরঘটিত প্রতিজ্ঞা দ্বারাই তাঁহার ও তাঁহার কাব্যের নাম ঘটকর্পর হইয়াছে। ঘটকর্পরের এই গর্ব্বিত প্রতিজ্ঞা দর্শনে রোষপরবশ হইয়া কালিদাস নলোদয় রচনা করেন। ঘটকর্পর অপেক্ষা নলোদয়ে যমকের আড়ম্বর অনেক অধিক। যদি ঐ কিম্বদন্তী সমূলক হয়, তাহা হইলে কালিদাস ঘটকর্পরের যমকরচনাগর্ব্ব বিলক্ষণ খর্ব্ব করিয়াছিলেন।

সূর্য্যশতক।

সূর্য্যশতক ময়ূরভট্টপ্রণীত। ময়ূরভট্ট এক শত শ্লোকে সূর্য্যের ও ও তদীয় মণ্ডল, কিরণ, অশ্ব ও সারথির বর্ণনা ও স্তব করিয়াছেন। এরূপ কিম্বদন্তী আছে, ময়ূরভট্ট এই শতশ্লোকাত্মক সূর্য্য স্তব রচনা করিয়া কুষ্ঠ ব্যাধি হইতে মুক্ত হইয়াছিলেন। সূর্য্যশতকের রচনা অতিপ্রগাঢ় ও অতিসুন্দর; ইহাতে অসাধারণ কবিত্বশক্তিও প্রদর্শিত হইয়াছে। কিন্তু ময়ূরভট্টের যেরূপ রচনাশক্তি ও যেরূপ কবিত্বশক্তি ছিল, তাহা বিষয়ান্তরে প্রয়োজিত হইলে, তিনি সূর্য্যশতক অপেক্ষা অনেক অংশে উৎকৃষ্ট কাব্য রচনা করিয়া যাইতে পারিতেন সন্দেহ নাই।

(৮) जीयेय येन कविना यमकैः परेण
तस्मै वहेयमुदकं घटकर्परेण ॥

কোষকাব্য।

পরস্পরনিরপেক্ষ শ্লোকসমূহকে কোষকাব্য বলে।

অমরুশতক।

সংস্কৃত ভাষায় যত কোষকাব্য আছে তন্মধ্যে অমরুশতক সর্ব্বোৎকৃষ্ট। এই শতশ্লোকাত্মক কাব্যের রচনা অতি উত্তম। রচনা দেখিয়া স্পষ্ট বোধ হয় ইহা প্রাচীন গ্রন্থ। এই কাব্যে অসাধারণ কবিত্বশক্তি প্রদর্শিত হইয়াছে। কালিদাসের গ্রন্থ পাঠ করিলে অন্তঃকরণে যেরূপ অনির্ব্বচনীয় আহ্লাদের সঞ্চার হয়, অমরুশতকের কোন কোন অংশ পাঠেও তদনুরূপ হইয়া থাকে। বস্তুতঃ, অমরু যে এক জন অতি প্রধান কবি ছিলেন তাহার কোন সংশয় নাই। অমরু অধিক লিখিয়া যাইতে পারেন নাই যথার্থ বটে, কিন্তু যাহা লিখিয়া গিয়াছেন, তাহাতেই তাঁহার প্রধান কবি বলিয়া চিরস্মরণীয় হইবাব সম্পূর্ণ সংস্থান হইয়াছে। অমরুশতক আদিরসাশ্রিত কাব্য; কিন্তু এক টীকাকার, প্রথমতঃ আদিরস পক্ষে ব্যাখ্যা করিয়া, পক্ষান্তরে শান্তিরসাশ্রিত করিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছেন। টীকাকার, অমরুশতকের শান্তি পক্ষে ব্যাখ্যা করিতে উদ্যত হইয়া, কেবল উপহাসাস্পদ হইয়াছেন। তাঁহার দুর্ভাগ্য ক্রমে এক শ্লোকেরও শান্তি পক্ষে সম্যক অর্থসমাবেশ হইয়া উঠে নাই।

শান্তিশতক।

এই শান্তরসাশ্রিত শতক কাব্য শিহ্লণপ্রণীত। শিহ্লণ অতি উত্তম কবি ছিলেন; এবং অর্থলাভার্থে পরোপাসনা, লোভ, বিষয়াসঙ্গ ইত্যাদির নিন্দা ও বিষয়ের অনিত্যতা প্রতিপাদন এবং যদৃচ্ছালাভ সন্তোষ প্রভৃতির স্বীয় শতকে সৎকবির ন্যায় বর্ণন করিয়াছেন। শান্তিশতকের রচনা উত্তম। সমুদায় পর্য্যালোচনা করিলে শান্তিশতক অতি উৎকৃষ্ট কাব্য।

নীতিশতক, শৃঙ্গারশতক, বৈরাগ্যশতক।

নীতিশতকে নানা সুনীতির উপদেশ আছে। শৃঙ্গারশতকের সমুদায় শ্লোক আদিরসাশ্রিত। বৈরাগ্যশতক সর্ব্বাংশে শান্তিশতকের তুল্য। তিনের মধ্যে নীতিশতক সর্ব্বোৎকৃষ্ট। এই তিন শতকের রচয়িতার নাম ভর্তৃহরি। ভর্তৃহরির রচনাও উত্তম এবং কবিত্ব-শক্তিও বিলক্ষণ ছিল। অনেকে কহিয়া থাকেন এই ভর্তৃহরিই বিক্রমাদিত্যের সহোদর। যেরূপ জনশ্রুতি আছে, তদনুসারে বিক্রম-সোদর ভর্তৃহরি অত্যন্ত নীতিপরায়ণ ও অত্যন্ত স্ত্রৈণ ছিলেন এবং পরিশেষে স্ত্রীর উপর বিরক্ত হইয়া বৈরাগ্য অবলম্বন করিয়াছিলেন। তাঁহার অবস্থার সহিত তিন কাব্যার্থের যেরূপ ঐক্য হইতেছে তাহাতে এই তিন কাব্য তাঁহার রচিত এ কথা নিতান্ত অসঙ্গত বোধ হয় না।

আর্য্যা সপ্তশতী।

এই সাত শত শ্লোকাত্মক কাব্য আর্য্যা ছন্দে রচিত, এই নিমিত্ত ইহা আর্য্যাসপ্তশতী নামে প্রসিদ্ধ। গ্রন্থকর্ত্তার নাম গোবর্দ্ধন এই নিমিত্ত গোবর্দ্ধনসপ্তশতী নামেও নির্দ্দিষ্ট হইয়া থাকে। গোবর্দ্ধন সৎকবি ছিলেন। তাঁহার রচনা সরল ও মধুর। জয়দেব গীতগোবিন্দের প্রারম্ভে গোবর্দ্ধনের সবিশেষ প্রশংসা করিয়াছেন (৯)।

গদ্য কাব্য।

কাদম্বরী।

ইহা অত্যন্ত আক্ষেপের বিষয় সংস্কৃত ভাষায় গদ্য সাহিত্যগ্রন্থ অধিক নাই। আমরা যে কয়েক খানি গদ্যগ্রন্থ দেখিয়াছি তন্মধ্যে কাদম্বরী সর্ব্বশ্রেষ্ঠ। কাদম্বরী গদ্যে রচিত বটে, কিন্তু অতি প্রধান কাব্য মধ্যে

(৯) শৃঙ্গারোত্তরসৎপ্রমেয়রচনৈরাচার্য্যগোবর্দ্ধন
স্পর্দ্ধী কোঽপি ন বিশ্রুতঃ।

পরিগণিত। এই গ্রন্থ বাণভট্টপ্রণীত। বাণভট্ট মহাকবিও সংস্কৃত রচনায় মহাপণ্ডিত ছিলেন। কাব্য শাস্ত্রে যে সকল বিষয়ের বর্ণন করিতে হয়, বাণভট্ট এই গ্রন্থে তাহার কিছুই পরিত্যাগ করিয়া যান নাই। যখন যাহা বর্ণন করিয়াছেন তাহাই অসাধারণ। তাঁহার বর্ণনা সকল কারুণ্য, মাধুর্য্য ও অর্থের গাম্ভীর্য্যে পরিপূর্ণ। রচনা মধুর, কোমল, ললিত ও প্রগাঢ়। রচনার বিশেষ প্রশংসা এই, বাণভট্ট যে সকল শব্দ বিন্যাস করিয়াছেন তাহার একটীও পরিবর্ত্তসহ নহে।

এই গ্রন্থে চন্দ্রাপীড় নামক রাজকুমার ও গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথের কন্যা কাদম্বরীর বৃত্তান্ত বর্ণিত হইয়াছে। কাদম্বরীর যে অংশে মহাশ্বেতানাম্নী এক তপস্বিনী চন্দ্রাপীড়ের নিকট পরিদেবিতপরিপূর্ণ আত্মবৃত্তান্ত বর্ণন করিতেছে, ঐ অংশ এমত মনোহর যে বোধ হয় কোন দেশের কোন কবি তদপেক্ষায় অধিক মনোহর রচনা ও বর্ণনা করিতে পারেন নাই। মহাশ্বেতার উপাখ্যান এই অত্যুৎকৃষ্ট কাব্যের সর্ব্বোৎকৃষ্ট ভাগ। বোধ হয় কালিদাস ও ভবভূতি ভিন্ন কোন সংস্কৃত কবি সেরূপ লিখিতে পারেন না।

কাদম্বরী এইরূপ অশেষগুণসম্পন্ন হইয়াও দোষস্পর্শশূন্য নহে। বাণভট্ট মধ্যে মধ্যে শব্দশ্লেষ ও বিরোধাভাস ঘটিত অধিক রচনা করিয়াছেন। ঐ সকল স্থলে গ্রন্থকর্ত্তার অসাধারণ নৈপুণ্য প্রদর্শিত হইয়াছে যথার্থ বটে, এবং ভারতবর্ষীয় পণ্ডিতেরাও ঐরূপ রচনাকে চিত্তরঞ্জন জ্ঞান করিয়া থাকেন; কিন্তু ঐ সকল স্থল যে দুরূহ ও নীরস ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে হইবেক। এতদ্ব্যতিরিক্ত, মধ্যে মধ্যে দীর্ঘসমাসঘটিত অতি দীর্ঘ দীর্ঘ বাক্য আছে। এই দ্বিবিধ দোষস্পর্শ না থাকিলে কাদম্বরীর ন্যায় কাব্যগ্রন্থ অতি অল্প পাওয়া যাইত।

দুর্ভাগ্যক্রমে বাণভট্ট আপন গ্রন্থ সমাপন করিয়া যাইতে পারেন নাই। তিনি যে পর্য্যন্ত লিখিয়া গিয়াছিলেন তাহা কাদম্বরীর পূর্ব্ব ভাগ নামে প্রসিদ্ধ। তদীয় পুত্র উপাখ্যানের উত্তরভাগ সঙ্কলন

করিয়াছেন। কিন্তু পুত্র পৈতৃক অলৌকিক কবিত্বশক্তির ও অসাধারণ রচনাশক্তির উত্তরাধিকারী হয়েন নাই। উত্তর ভাগ কোন ক্রমেই পূর্ব্ব ভাগের যোগ্য নহে।

দশকুমারচরিত।

দশকুমারচরিত এক অত্যুত্তম গদ্য গ্রন্থ। কিন্তু কাব্যাংশে তাদৃশ উৎকৃষ্ট নয়। রচনা অতি উত্তম বটে, কিন্তু কাদম্বরীর রচনার ন্যায় চমৎকারিণী ও চিত্তহারিণী নহে। এই গ্রন্থে নানা বিষয়ের বর্ণনা আছে; কিন্তু বর্ণনা সকল যেরূপ কৌতুকাবহ সেরূপ রসশালিনী নহে। পাঠ করিলে প্রীত ও চমৎকৃত হওয়া যায় দশকুমারচরিত সেরূপ গ্রন্থ নয়। গ্রন্থকর্ত্তার নাম দণ্ডী।

দশকুমারচরিত শব্দে দশ কুমারের বৃত্তান্তবর্ণনাত্মক গ্রন্থ বুঝায়। কিন্তু যে দশকুমারচরিত দণ্ডিপ্রণীত বলিয়া প্রচলিত, তাহাতে কেবল আট কুমারের চরিত্র মাত্র বর্ণিত আছে। সুতরাং এই গ্রন্থ অসম্পূর্ণবৎ বোধ হইতেছে। যেরূপে গ্রন্থের আরম্ভ হইতেছে তাহা কোন ক্রমেই সংলগ্ন বোধ হয় না। আমরা যে সকল ব্যক্তি ও বৃত্তান্তের বিষয় বিন্দু বিসর্গও অবগত নহি, এককালে সেই সকল বিষয়ের আরম্ভ হইতেছে। সমাপ্তিও আরম্ভের ন্যায় অসংলগ্ন। অষ্টম কুমারের বৃত্তান্ত সম্পূর্ণরূপে বর্ণিত হইল এরূপ প্রতীতি হয় না। এইরূপে দশকুমারচরিতের উপক্রম ও উপসংহার উভয়ত্রই ন্যূনতা প্রতিভাসমান হইতেছে।

উপক্রমের ন্যূনতা পরিহারার্থে পূর্ব্বপীঠিকা নামে এক উপক্রমণিকা রচিত হইয়াছে। এই উপক্রমণিকাতে,দশ সংখ্যা পূর্ণ করিবার নিমিত্ত,আর দুই কুমারের বৃত্তান্ত সঙ্কলিত হইয়াছে। এই অংশও দণ্ডির নিজের রচিত বলিয়া প্রচলিত। কিন্তু উপক্রমণিকার ও দশকুমারচরিতের রচনা পরস্পর এরূপ বিসম্বাদিনী যে ঐ উভয় এক লেখনীর মুখ হইতে বিনির্গত বলিয়া কোন ক্রমেই প্রতীতি হয় না।

দশকুমারচরিতের যেরূপ এক উপক্রমণিকা আছে সেই রূপ এক

পরিশিষ্টও আছে। ইহার নাম শেষ অর্থাৎ কথার অবশিষ্টাংশ। এই অবশিষ্টাংশ চক্রপাণিদীক্ষিতনামক এক মহারাষ্ট্রীয় ব্রাহ্মণের রচিত। আমরা এ পর্য্যন্ত এই পুস্তক দেখিতে পাই নাই। সুবিখ্যাত সংস্কৃতবেত্তা শ্রীযুত হোরেস্ হেমেন্ উইলসন্ ঐ পুস্তক দেখিয়াছেন। তিনি কহেন যে চক্রপাণি নিজ রচনার উৎকর্ষসাধনার্থে যথেষ্ট শ্রম করিয়াছিলেন, কিন্তু তাঁহার রচনা দণ্ডির রচনা অপেক্ষা নিকৃষ্ট। বিশেষতঃ, উপাখ্যানভাগ এমত অসার ও অকিঞ্চিৎকর যে পাঠ করিলে পরিশ্রম পোষায় না।

অনেকে অনুমান করেন দণ্ডী গ্রন্থকর্ত্তার নাম নহে; ইহা তাঁহার উপাধিমাত্র। যাহারা সংসারাশ্রম পরিত্যাগ করিয়া সন্ন্যাস ধর্ম্ম গ্রহণ করে তাহাদিগকে দণ্ডী কহে। এই অনুমান নিতান্ত অসঙ্গত বোধ হয় না। আর এই গ্রন্থকর্ত্তার বিষয়ে যে এক কিম্বদন্তী প্রচলিত আছে তদ্দ্বারাও উক্ত অনুমানের বিলক্ষণ পোষকতা হইতেছে। দণ্ডিদিগের নিয়মিত বাসস্থান নাই; তাঁহারা সর্ব্বদা পর্য্যটন করেন। কেবল বর্ষা চারি মাস, পর্য্যটনে অশেষ ক্লেশ বলিয়া, কোন গৃহস্থের আবাসে আশ্রয় গ্রহণ করেন। আমাদিগের দণ্ডীও গৃহস্থের ভবনে বর্ষা চারি মাস বাস করিতেন, এবং সেই অবকাশে এক এক খানি গ্রন্থ রচনা করিতেন। যে বার যে গৃহস্থের আশ্রয়ে থাকিতেন, বর্ষান্তে প্রস্থান কালে, স্বরচিত পুস্তক খানি তাহার হস্তে সমর্পণ করিয়া যাইতেন। দশকুমারচরিত দণ্ডির এক বর্ষা চারি মাসের রচনা। আর কাব্যাদর্শ নামে দণ্ডির যে অলঙ্কার গ্রন্থ আছে তাহাও আর এক বর্ষা চারিমাসের পরিশ্রম। যদি এই কিম্বদন্তী অমূলক না হয়, তাহা হইলে দশকুমারচরিতের উপক্রমে ও উপসংহারে যে ন্যূনতা আছে তাহারও এক প্রকার হেতু উপলব্ধ হইতেছে। যেহেতু, কিম্বদন্তী ইহাও কহিয়া থাকেন, দণ্ডী যে বর্ষাতে দশকুমারচরিত রচনা করেন সেই বর্ষাতেই তাঁহার প্রাণত্যাগ হয়। এই নিমিত্ত দশকুমারচরিতের কথা সমাপ্ত ও ...পর সংলগ্ন করিয়া যাইতে পারেন নাই।

বাসবদত্তা।

বাসবদত্তা সুবন্ধু নামক কবির রচিত। সুবন্ধু স্বগ্রন্থের সমাপিকাতে, বররুচির ভাগিনেয় বলিয়া, আত্মপরিচয় প্রদান করিয়াছেন।(১০) বররুচি বিক্রমাদিত্যের নবরত্নের অন্তর্ব্বর্ত্তী ছিলেন। বিক্রমাদিত্যের মৃত্যুর পর সুবন্ধু বাসবদত্তা রচনা করেন; এবং গুণগ্রাহী বিক্রমাদিত্য বিদ্যমান নাই বলিয়া আক্ষেপ করিয়াছেন। (১১)

বাণভট্টের কাদম্বরী ও সুবন্ধুর বাসবদত্তা এই উভয় এক প্রণালীতে রচিত। এবং বোধ হয় এরূপ রচনাপ্রণালী সুবন্ধুই প্রথম উদ্ভাবিত করেন। বাণভট্ট যে বিক্রমাদিত্যের সময়ের অনেক পরে প্রাদুর্ভূত হইয়াছিলেন তাহার কোন সংশয় নাই। এই গ্রন্থে কন্দর্পকেতু নামক এক রাজকুমার ও বাসবদত্তা নাম্নী এক রাজকুমারীর বৃত্তান্ত বর্ণিত হইয়াছে।

সুবন্ধু বাসবদত্তা রচনাতে যথেষ্ট নৈপুণ্য প্রদর্শন করিয়াছেন। কিন্তু তাঁহার তাদৃশ অসাধারণ কবিত্বশক্তি ছিল না। কি রচনা, কি বর্ণনা, কি কথাযোজনা, সুবন্ধুর বাসবদত্তা সর্ব্বাংশেই মধ্যম। পাঠ করিলে এই গ্রন্থ প্রধান কবির রচিত বলিয়া প্রতীতি হয় না। [কি]ন্তু গ্রন্থের আরম্ভে যে কয়েকটী শ্লোক আছে এবং গ্রন্থের মধ্যে [ক]বি যে দুই শ্লোকে কুপিত সিংহের বর্ণনা করিয়াছেন তাহা অত্যন্ত মনোহর।

(১০)ইতি শ্রীবররুচিভাগিনেয়সুবন্ধুবিরচিতা বাসবদত্তাখ্যায়িকা সমাপ্তা।

(১১)সারসবত্তা বিহতা নবকা বিলসন্তি চরতি নো কঙ্কঃ।
সরসীব কীর্ত্তিশেষং গতবতি ভুবি বিক্রমাদিত্যে॥

চম্পূকাব্য।

আমরা যে কয়েক খানি চম্পূকাব্য দেখিয়াছি তন্মধ্যে বিশেষ প্রশংসার যোগ্য এক খানিও নাই। কালিদাস ও বাণভট্ট, ভারবি ও ভবভূতি, মাঘ ও শ্রীহর্ষদেব প্রভৃতি প্রধান কবিরা এ বিষয়ে হস্তক্ষেপ করেন নাই। আর যদিই কোন প্রধান কবি চম্পূ কাব্য রচনা করিয়া থাকেন, হয় তাহা অদ্যাপি বিদ্যমান নাই, অথবা এপর্য্যন্ত উদ্ভাবিত হয় নাই।

আমরা যে সাত খানি চম্পূকাব্য দেখিয়াছি, তন্মধ্যে দেবরাজ বিরচিত অনিরুদ্ধচরিত সর্ব্বোৎকৃষ্ট। দেবরাজের রচনাশক্তি ও কবিত্বশক্তি নিতান্ত সামান্য ছিল না। যে ভোজদেবকে বিদ্যোৎসাহিতা ও গুণগ্রাহিতা বিষয়ে দ্বিতীয় বিক্রমাদিত্য বলিয়া গণনা করিতে হয় তাঁহার রচিত চম্পূরামায়ণ ও চিরঞ্জীববিরচিত বিদ্বন্মোদ তরঙ্গিণী নিতান্ত অগ্রাহ্য চম্পূ নহে। এতদ্ব্যতিরিক্ত, অনন্তভট্ট প্রণীত চম্পূভারত, ভানুদত্তবিরচিত কুমারভার্গবীয়, রামনাথকৃত চন্দ্রশেখরচেতোবিলাসচম্পূ, এবং রূপগোস্বামিলিখিত আনন্দবৃন্দাবনচম্পূ, এই কয়েক চম্পূকে কাব্য নামে নির্দ্দেশ করিতে পারা যায় এমত কোন বিশেষ গুণ দেখিতে পাওয়া যায় না।

দৃশ্যকাব্য।

মহাকাব্য প্রভৃতি কেবল শ্রবণ করা যায় এই নিমিত্ত তাহাদিগকে শ্রব্যকাব্য বলে। নাটকের শ্রব্যকাব্যের ন্যায় শ্রবণ হয়; অধিকন্তু, রঙ্গভূমিতে নট দ্বারা অভিনয়কালে, দর্শনও হইয়া থাকে। এবং ইহাই নাটকের প্রধান উদ্দেশ্য। এই নিমিত্ত নাটকের নাম দৃশ্যকাব্য। দৃশ্যকাব্য দ্বিবিধ রূপক ও উপরূপক। রূপক নাটক, প্রকরণ প্রভৃতি দশবিধ। উপরূপক নাটিকা, ত্রোটক প্রভৃতি অষ্টাদশবিধ। আলঙ্কারিকেরা দৃশ্যকাব্যের এই যে অষ্টাবিংশতি বিভাগ নির্দ্দেশ করিয়াছেন তাহাদের বিশেষভেদগ্রাহক তাদৃশ কোন লক্ষণ নাই।

সর্ব্বপ্রধান ভেদ নাটকের যে সমস্ত লক্ষণ নিরূপিত আছে দৃশ্যকাব্যের অন্যান্য ভেদও সেই সমুদায় লক্ষণাক্রান্ত। আলঙ্কারিকেরা অন্যান্য ভেদের, অঙ্কসংখ্যার ন্যূনাধিক্য প্রভৃতি, যে কয়েকটী বিশেষ লক্ষণ নিরূপণ করিয়াছেন তাহা এমত সামান্য যে সেই অনুরোধে, দৃশ্যকাব্যের অষ্টাবিংশতি বিভাগ কল্পনা না করিয়া, যাবতীয় দৃশ্যকাব্যকে কেবল নাটক নামে নির্দ্দেশ করাই ন্যায়ানুগত বোধ হয়।

প্রত্যেক নাটকের প্রারম্ভে সূত্রধার, অর্থাৎ প্রধান নট, স্বীয় পত্নী অথবা অন্য দুই এক সহচরের সহিত রঙ্গভূমিতে প্রবিষ্ট হইয়া, কবির ও নাটকের নাম নির্দ্দেশ করে এবং প্রসঙ্গক্রমে নাটকীয় ইতিবৃত্ত অবতীর্ণ করিয়া দেয়। এই অংশকে প্রস্তাবনা কহে। যে স্থলে ইতিবৃত্তের স্থূল স্থূল অংশের এক প্রকার শেষ হয় সেই সেই স্থলে পরিচ্ছেদ কল্পিত হইয়া থাকে। ঐ পরিচ্ছেদের নাম অঙ্ক। নাটকে এক অবধি দশ পর্য্যন্ত অঙ্কসংখ্যা দেখিতে পাওয়া যায়। নাটক আদ্যোপান্ত গদ্যে রচিত, কেবল মধ্যে মধ্যে শ্লোক থাকে। আদি অবধি অন্ত পর্য্যন্ত এক ভাষায় রচিত নহে। ব্যক্তি বিশেষের বক্তব্য ভাষা বিশেষে সঙ্কলিত হইয়া থাকে। রাজা, মন্ত্রী, ঋষি, পণ্ডিত, নায়ক প্রভৃতি প্রধান পুরুষেরা সংস্কৃত ভাষী; স্ত্রী, বালক ও অপ্রধান পুরুষদিগের ভাষা প্রাকৃত। প্রাকৃত সংস্কৃতের অপভ্রংশ। আলঙ্কারিকেরা এই অপভ্রংশের, কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ বৈলক্ষণ্য নিবন্ধন, সপ্তদশ ভেদ কল্পনা করিয়াছেন। স্ত্রীলোকের মধ্যে পণ্ডিতা তপস্বিনীরা সংস্কৃতভাষিণী। অশুভ ঘটনা দ্বারা সংস্কৃত নাটকের উপসংহার করিতে নাই। সংস্কৃত ভাষায় আদিরস, বীররস ও করুণরস প্রধান নাটক অনেক।

মহাকাব্য, খণ্ডকাব্য, কোষকাব্যের ন্যায়, সংস্কৃত ভাষায় নাটকও অনেক আছে। কালিদাস প্রভৃতি প্রধান কবিগণ এই ভাষায় নাটক রচনা করিয়া গিয়াছেন। এক সময়ে এই ভারতবর্ষে রঙ্গভূমিতে সংস্কৃত নাটকের অভিনয় হইত।

ভারতবর্ষীয় পণ্ডিতেরা ভরত মুনিকে সংস্কৃত নাট্যশাস্ত্রের সৃষ্টি-

কর্ত্তা বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়া থাকেন। তাঁহারা ইহাও কহেন এই ভরতমুনি অপ্সরাগণের নাট্যব্যাপারের উপদেষ্টা। অপ্সরাগণ, ইঁহার নিকট উপদিষ্ট হইয়া, দেবরাজ ইন্দ্রের সভায়, নাটকের অভিনয় করিয়া থাকে। এরূপ নাট্যাচার্য্য যে কোন কালেই বিদ্যমান ছিলেন না এ বিষয়ে সংশয় হইতে পারে না। কিন্তু সংস্কৃত আলঙ্কারিকেরা স্ব স্ব গ্রন্থে মধ্যে মধ্যে ভরতসূত্র বলিয়া প্রমাণ উদ্ধৃত করিয়া থাকেন। তাহাতে ইহাই প্রতীয়মান হইতেছে নাটকরচনা বিষয়ে সংস্কৃত ভাষায় এক অতি প্রাচীন গ্রন্থ ছিল; ভারতবর্ষীয় পণ্ডিতেরা, অবিসম্বাদিত প্রামাণ্য সংস্থাপনার্থে, ঐ গ্রন্থ ঋষিপ্রণীত বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন।

কেবল এই বিষয়েই নহে, অন্যান্য বিদ্যাবিষয়েও এই প্রথা লক্ষিত হইতেছে। সর্ব্বাপেক্ষা প্রাচীন ব্যাকরণ পাণিনিমুনিপ্রণীত বলিয়া প্রচলিত। ঐ ব্যাকরণের বার্ত্তিক কাত্যায়ন মুনির রচিত, ভাষ্য পতঞ্জলিমুনিপ্রণীত। সর্পরাজ অনন্তদেব, পুরাণমতানুসারে, সসাগরা সদ্বীপা পৃথিবী ফণমণ্ডলোপরি ধারণ করিয়া আছেন পতঞ্জলি তাঁহার অবতার। সর্পের অবতার মুনির রচিত বলিয়া ঐ ভাষ্য ফণিভাষ্য নামে প্রসিদ্ধ আছে। যাবতীয় পুরাণ মহর্ষিব্যাসরচিত বলিয়া প্রচলিত। ধর্ম্মশাস্ত্র সকল মনু, অত্রি, হারীত, যাজ্ঞবল্ক্য প্রভৃতি এক এক মুনির রচিত বলিয়া প্রসিদ্ধ। সাংখ্য ও পাতঞ্জল, ন্যায় ও বৈশেষিক, বেদান্ত ও মীমাংসা এই ছয় দর্শন কপিল ও পতঞ্জলি, গোতম ও কণাদ, ব্যাস ও জৈমিনি এই ছয় মুনির নামে প্রচলিত। তন্ত্র সকল যে ইদানীন্তন কালের রচিত গ্রন্থ তাহার কোন সংশয় নাই—এত ইদানীন্তন, যে কোন তন্ত্রে ইয়ুরোপীয় লোক ও লণ্ডননগরেরও নির্দ্দেশ দেখিতে পাওয়া যায়(১২)। ঐ

(১২)পূর্ব্বাম্নায়ে নবশতং ষড়শীতিঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ।
फिरङ्गभाषया तन्त्रास्तेषां संसाधनाङ्कवि ।
अधिपा मण्डलानाञ्च संग्रामेष्वपराजिताः ।
इंरेजा नव षट् पञ्च लण्ड्रजाश्चापि भाविनः॥
মেরুতন্ত্র। ২৩ প্রকাশ।

সকল তন্ত্র শিবপ্রোক্ত বলিয়া প্রচলিত। বেদ সকল সৃষ্টিকর্ত্তার নিজের রচিত বলিয়া প্রসিদ্ধ। এইরূপে, নব্য কাব্য ও সংগ্রহ গ্রন্থ ভিন্ন, প্রায় সমুদায় সংস্কৃত শাস্ত্রই এক এক মুনির অথবা দেবতার প্রণীত বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে।

অভিজ্ঞানশকুন্তল, বিক্রমোর্ব্বশী, মালবিকাগ্নিমিত্র।

সংস্কৃত ভাষায় যত নাটক আছে শকুন্তলা সেই সকল অপেক্ষা সর্ব্বাংশে উৎকৃষ্ট তাহার সন্দেহ নাই। এই অপূর্ব্ব নাটকের, আদি অবধি অন্ত পর্য্যন্ত, সর্ব্বাংশই সর্ব্বাঙ্গসুন্দর। যদি শত বার পাঠ কর শত বারই অপূর্ব্ব বোধ হইবেক। এই নাটক সাত অঙ্কে বিভক্ত। ইহাতে দুষ্মন্ত ও শকুন্তলার বৃত্তান্ত বর্ণিত হইয়াছে। প্রথম অঙ্কে দুষ্মন্ত ও শকুন্তলার সাক্ষাৎকার, তৃতীয় অঙ্কে উভয়ের মিলন, চতুর্থে শকুন্তলার প্রস্থান, পঞ্চমে শকুন্তলার দুষ্মন্তসমীপ গমন ও প্রত্যাখ্যান, ষষ্ঠে রাজার বিরহ, সপ্তমে শকুন্তলার সহিত পুনর্ম্মিলন; এই সকল স্থলে কালিদাস স্বীয় অলৌকিক কবিত্বশক্তির একশেষ প্রদর্শন করিয়াছেন। উত্তম সংস্কৃতজ্ঞ সহৃদয় ব্যক্তি ঐ সকল স্থল পাঠ করিলে, অবশ্যই তাঁহার অন্তঃকরণে এই দৃঢ় প্রতীতি জন্মিবেক যে মনুষ্যের ক্ষমতায় ইহা অপেক্ষা উৎকৃষ্ট রচনা সম্ভবিতে পারে না। বস্তুতঃ, কালিদাসের অভিজ্ঞানশকুন্তল অপূর্ব্ব পদার্থ।

ভারতবর্ষীয়েরাই যে, স্বদেশীয় কাব্য বলিয়া, শকুন্তলার এত প্রশংসা করেন এমত নহে; দেশান্তরীয় পণ্ডিতেরাও শকুন্তলার এইরূপ, অথবা ইহা অপেক্ষা অধিক, প্রশংসা করিয়াছেন। নানা বিদ্যাবিশারদ অশেষদেশভাষাজ্ঞ সুবিখ্যাত সর্ উইলিয়ম জোন্স শকুন্তলা পাঠ করিয়া এমত মোহিত হইয়াছিলেন যে কালিদাসকে স্বদেশীয় অদ্বিতীয় কবি শেক্সপিয়রের তুল্য বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন। এবং জর্ম্মনদেশীয় অতি প্রধান পণ্ডিত ও অতি প্রধান কবি গেটি শকুন্তলার সর্ উইলিয়ম্ জোন্সকৃত ইংরেজী অনুবাদের

ফর্ষ্টরকৃত জর্ম্মন অনুবাদ পাঠ করিয়া লিখিয়াছেন "যদি কেহ বসন্তের পুষ্প ও শরদের ফল লাভের অভিলাষ করে, যদি কেহ চিত্তের আকর্ষণ ও বশীকরণ কারি বস্তুর অভিলাষ করে, যদি কেহ প্রীতিজনক ও প্রফুল্লকর বস্তুর অভিলাষ করে, যদি কেহ স্বর্গ ও পৃথিবী এই দুই এক নামে সমাবেশিত করিবার অভিলাষ করে; তাহা হইলে, হে অভিজ্ঞানশকুন্তল! আমি তোমার নাম নির্দ্দেশ করি; এবং তাহা হইলেই সকল বলা হইল"। যদি বিদেশীয় লোক, অনুবাদের অনুবাদ পাঠ করিয়া, এমত প্রীত ও চমৎকৃত হইতে পারেন, তবে স্বদেশীয়েরা যে সেই বিষয় মূল পুস্তকে পাঠ করিয়া কত মোহিত হইবেন তাহা সকলেই অনুভব করিতে পারেন।

বিক্রমোর্ব্বশী পাঁচ অঙ্কে বিভক্ত। ইহাতে পুরূরবাঃ ও উর্ব্বশীর বৃত্তান্ত বর্ণিত হইয়াছে। বিক্রমোর্ব্বশীর আদ্যোপান্ত শকুন্তলার ন্যায় সর্ব্বাঙ্গস্থন্দর নহে। কিন্তু চতুর্থ অঙ্কে, উর্ব্বশীর বিরহে একা[ন্ত] অধীর ও বিচেতন হইয়া, পুরূরবাঃ তদীয় অন্বেষণার্থে বনে বনে ভ্রমণ করিতেছেন, এই বিষয়ের যে বর্ণন আছে তাহা অত্যন্ত মনোহর—এমত মনোহর, যে কোন দেশীয় কোন কবি তদপেক্ষা অধিক মনোহর বর্ণনা করিতে পারেন না, এ কথা বলিলে নিতান্ত অসঙ্গত হইবেক না।

কালিদাসের তৃতীয় নাটক মালবিকাগ্নিমিত্র। মালবিকাগ্নিমিত্র উত্তম নাটক বটে, কিন্তু শকুন্তলা ও বিক্রমোর্ব্বশী অপেক্ষা অনেক ন্যূন। এই নাটক পাঁচ অঙ্কে বিভক্ত। ইহাতে মালবিকা ও অগ্নিমিত্র রাজার উপাখ্যান বর্ণিত হইয়াছে। বোধ হয়, কালিদাস সর্ব্বপ্রথম এই নাটক রচনা করিয়াছিলেন।

বীরচরিত, উত্তরচরিত, মালতীমাধব।

এই তিন নাটক ভবভূতিপ্রণীত। ভবভূতি এক জন অতিপ্রধা[ন] কবি ছিলেন। কবিত্বশক্তি অনুসারে গণনা করিতে হইলে কালি[-] দাসের অব্যবহিত পরেই ভবভূতির নাম নির্দ্দেশ হওয়া উ[চিত]

ভবভূতির রচনা হৃদয়গ্রাহিণী ও অভিচমৎকারিণী। সংস্কৃতভাষায় যত নাটক আছে ভবভূতিপ্রণীত নাটকত্রয়ের রচনা সেই সর্ব্বাপেক্ষা সমধিক প্রগাঢ়। ইনি অন্যান্য কবিদিগের ন্যায় মধুর ও কোমল রচনাতে বিলক্ষণ প্রবীণ ছিলেন; অধিকন্তু, ইঁহার নাটকে মধ্যে মধ্যে অর্থের যেরূপ গাম্ভীর্য্য দেখিতে পাওয়া যায়, অন্যান্য কবির নাটকে প্রায় সেরূপ দেখিতে পাওয়া যায় না। ভবভূতির বিশেষ প্রশংসা এই যে, অন্যান্য কবিরা অনাবশ্যক ও অনুচিত স্থলেও আদিরস অবতীর্ণ করিয়া থাকেন। কিন্তু ইনি সে বিষয়ে অত্যন্ত সাবধান। অনাবশ্যক স্থলে কোন ক্রমেই স্বীয় রচনাকে আদিরসে দূষিত করেন না, আবশ্যক স্থলেও আদিরসঘটিত রচনা কালে অত্যন্ত সাবধান হইয়া থাকেন। ইঁহার যেমন বিশেষগুণ আছে, তেমনি কয়েকটী বিশেষ দোষও আছে। রচনার দোষে স্থানের স্থানের অর্থবোধ হওয়া দুর্ঘট। এবং মধ্যে মধ্যে সংস্কৃত ও প্রাকৃত ভাষাতে এমত অতিদীর্ঘসমাসঘটিত রচনা আছে যে তাহাতে অর্থবোধ ও রসাস্বাদ বিষয়ে বিলক্ষণ ব্যাঘাত জন্মিয়া উঠে। বিশেষতঃ, নাটকের কথোপকথন স্থলে সেরূপ দীর্ঘসমাস ঘটিত রচনা অত্যন্ত দূষ্য।

বীরচরিতে রামের বিবাহ অবধি রাবণবধানন্তর অযোধ্যাপ্রত্যাগমন ও রাজ্যাভিষেক পর্য্যন্ত বর্ণিত হইয়াছে। ইহা বীররসাশ্রিত নাটক। বীরচরিতে ভবভূতির কবিত্বশক্তি বিলক্ষণ প্রদর্শিত হইয়াছে; কিন্তু যে সমস্ত গুণ থাকিলে নাটক প্রশংসনীয় হয়, তৎ সমুদায় তাদৃশ অধিক নাই। তথাপি, রামচরিতের এই অংশ লইয়া অন্যান্য কবিরা যে সকল নাটক রচনা করিয়াছেন, বীরচরিত সেই সর্ব্বাপেক্ষা সর্ব্বাংশে উত্তম তাহার সন্দেহ নাই।

উত্তরচরিতে বীরচরিতবর্ণিতাবশিষ্ট রামচরিত বর্ণিত হইয়াছে। উত্তরচরিত ভবভূতির সর্ব্বপ্রধান নাটক। এই নাটক করুণরসাশ্রিত। বর্ণনা সকল কারুণ্য, মাধুর্য্য ও অর্থের গাম্ভীর্য্যে পরিপূর্ণ। [illegible] মধুর, ললিত ও প্রগাঢ়। ফলতঃ, শকুন্তলা আদিরস বিষয়ে

যেমন সর্ব্বোৎকৃষ্ট নাটক, উত্তরচরিত করুণ রস বিষয়ে সেই রূপ। এই নাটক পাঠ করিলে মোহিত হইতে ও মুহুর্মুহুঃ অশ্রুপাত করিতে হয়।

মালতীমাধব আদিরসাশ্রিত নাটক। ভবভূতি এই নাটকে আপন অসাধারণ রচনাশক্তি ও অসাধারণ কবিত্বশক্তির একশেষ প্রদর্শন করিয়াছেন; এবং প্রস্তাবনাতে গর্ব্বিতবাক্যে কহিয়াছেন "যাহারা আমার এই নাটকে অবজ্ঞা প্রদর্শন করে তাহারাই তাহার কারণ জানে; তাহাদের নিমিত্ত আমার এ যত্ন নয়। আমার কাব্যের ভাবগ্রহণসমর্থ কোন ব্যক্তি এই অসীম পৃথিবীর কোন স্থানে থাকিতে পারেন, অথবা কোন কালে উৎপন্ন হইতে পারেন"(১৩)। কিন্তু ভবভূতি অসাধারণ উৎকর্ষ সম্পাদনার্থে যেরূপ প্রয়াস পাইয়াছিলেন, এবং প্রস্তাবনাতে যেরূপ ঘোরতর অহঙ্কার প্রদর্শন করিয়াছেন, মালতীমাধব তত উত্তম নাটক হয় নাই। ইহাতে রচনার চাতুর্য্য ও মাধুর্য্য আছে এবং অর্থেরও অসাধারণ গাম্ভীর্য্য আছে যথার্থ বটে; কিন্তু কালিদাস ও শ্রীহর্ষদেব দুষ্মন্ত ও শকুন্তলার, বৎসরাজ ও রত্নাবলীর উপাখ্যান যেরূপ মনোহর করিয়া বর্ণন করিয়াছেন মালতী ও মাধবের বৃত্তান্ত ভবভূতি সেরূপ মনোহর করিতে পারেন নাই। বিশেষতঃ, অর্থবোধের কষ্ট ও অতিদীর্ঘ সমাস প্রভৃতি ভবভূতির যে সমস্ত দোষ আছে তৎসমুদায় মালতীমাধবেই ভূরি পরিমাণে উপলব্ধ হয়। আমরা মালতীমাধব পাঠ করিয়া ভবভূতির অসাধারণ কবিত্বশক্তি ও প্রগাঢ় রচনাশক্তির প্রশংসা করিতে প্রস্তুত আছি; কিন্তু মালতীমাধবকে অত্যুৎকৃষ্ট নাটক বলিয়া অঙ্গীকার করিতে কোন ক্রমেই সম্মত নহি। ভবভূতি

(১৩) যে নাম কেচিদিহ নঃ প্রথয়ন্ত্যবজ্ঞাং
জানন্তি তে কিমপি তান্ প্রতি নৈষ যত্নঃ।
উৎপৎস্যতেঽস্তি মম কোঽপি সমানধর্ম্মা
কালো হ্যয়ং নিরবধির্বিপুলা চ পৃথ্বী॥

যত অহঙ্কার করুন না কেন, তাঁহার মালতীমাধব কালিদাসের শকুন্তলা, শ্রীহর্ষদেবের রত্নাবলী এবং তাঁহার নিজের উত্তরচরিত অপেক্ষা অনেক অংশে ন্যূন। ভবভূতি স্বপ্রণীত নাটকত্রয়ের মধ্যে, বোধ হয়, মালতীমাধবকেই সর্ব্বোৎকৃষ্ট স্থির করিয়াছিলেন। কিন্তু পাঠকবর্গের বিবেচনা যেরূপ পক্ষপাতশূন্য হয়, গ্রন্থকর্ত্তাদের নিজের বিবেচনা সর্ব্বদা সেরূপ হইয়া উঠে না। বোধ হয়, সহৃদয় পাঠকমাত্রেই উত্তরচরিতকে ভবভূতির সর্ব্বোৎকৃষ্ট নাটক বোধ করিয়া থাকেন।

রত্নাবলী ও নাগানন্দ।

রত্নাবলী এক অত্যুৎকৃষ্ট নাটক—এমত উৎকৃষ্ট যে অনেকে রত্নাবলীকে যাবতীয় নাটক অপেক্ষা সমধিক মনোহর জ্ঞান করিয়া থাকেন। সে যাহা হউক, উৎকর্ষ অনুসারে পৌর্ব্বাপর্য্যক্রমে গণনা করিতে হইলে, শকুন্তলা ও উত্তরচরিতের পরে রত্নাবলীর নাম নির্দ্দেশ হওয়া উচিত। রত্নাবলী চারি অঙ্কে বিভক্ত। এই নাটকে বৎসরাজ ও সাগরিকার বৃত্তান্ত বর্ণিত হইয়াছে। রাজদর্শনানন্তর সাগরিকার বিরহ, রাজার ও বিদূষকের সারিকামুখে সাগরিকার বিরহাবস্থাশ্রবণ, সাগরিকার সহিত অকস্মাৎ রাজার সাক্ষাৎকার, ও রাজমহিষী বাসবদত্তার বেশে সাগরিকার রাজার সহিত সমাগম, দ্বিতীয় ও তৃতীয় অঙ্কে এই সকল বিষয় বর্ণনকালে কবি যেরূপ কৌশল ও যেরূপ কবিত্ব প্রদর্শন করিয়াছেন, বোধ হয় শকুন্তলা ও উত্তরচরিত ভিন্ন প্রায় আর কোন নাটকেই সেরূপ দেখিতে পাওয়া যায় না। নাগানন্দও উত্তম নাটক বটে, কিন্তু রত্নাবলী অপেক্ষা অনেক ন্যূন।

রত্নাবলী ও নাগানন্দ শ্রীহর্ষদেবপ্রণীত। শ্রীহর্ষদেব কশ্মীরের রাজা ছিলেন। কহ্লণ রাজতরঙ্গিণীর সপ্তম তরঙ্গে শ্রীহর্ষদেবের বৃত্তান্ত বর্ণিত আছে। রাজতরঙ্গিণীতে রত্নাবলী ও নাগানন্দের [illegible] নাই, কিন্তু এরূপ লিখিত আছে যে শ্রীহর্ষদেব অশেষদেশ

ভাষাজ্ঞ, সর্ব্বভাষায় সৎকবি ও সমস্ত বিদ্যার আধার ছিলেন(১৪)। রত্নাবলী ও নাগানন্দের প্রস্তাবনাতে রাজশ্রীহর্ষদেব প্রণীত বলিয়া নির্দ্দেশ আছে এবং রাজতরঙ্গিণীতেও রাজা শ্রীহর্ষদেব সৎকবি বলিয়া লিখিত আছে। সুতরাং রাজতরঙ্গিণীর শ্রীহর্ষদেবই যে রত্নাবলী ও নাগানন্দের রচয়িতা, এ বিষয়ে কোন সংশয় হইতে পারে না। বিশেষতঃ, আর কোন গ্রন্থে আর কোন রাজা শ্রীহর্ষদেবের উল্লেখ দেখিতে পাওয়া যায় না। শ্রীহর্ষদেব, কিঞ্চিদধিক আট শত বৎসর পূর্ব্বে, কশ্মীরের সিংহাসনে আরোহণ করিয়াছিলেন। তদনুসারে রত্নাবলী ও নাগানন্দ আট শত বৎসরের পুস্তক।

এরূপ প্রবাদ আছে, ধাবক নামে এক কবি রত্নাবলী ও নাগানন্দ রচনা করেন; শ্রীহর্ষদেব অর্থ প্রদান দ্বারা ধাবককে সম্মত ও সন্তুষ্ট করিয়া ঐ দুই নাটক আপন নামে প্রচলিত করিয়াছেন। প্রসিদ্ধ প্রধান আলঙ্কারিক মম্মটভট্টের লিখন দ্বারাও এইরূপ প্রতিপন্ন হইতেছে(১৫)। কিন্তু ধাবক ও শ্রীহর্ষদেবে সহস্র বৎসরের অধিক অন্তর। উভয়ে এক সময়ের লোক নহেন। কালিদাসের মালবিকাগ্নিমিত্রের প্রস্তাবনাতে, প্রাচীন নাটকলেখক বলিয়া, ধাবকের নামোল্লেখ আছে(১৬)। তদনুসারে ধাবক বিক্রমাদিত্যের সময়েরও পূর্ব্বে প্রাদুর্ভূত হইয়াছিলেন। সুতরাং ঐ লোকপ্রবাদ ও তন্মূলক মম্মটের সিদ্ধান্ত অমূলক বোধ হইতেছে। আর যখন শ্রীহর্ষদেবের সৎকবিত্ব ও অশেষবিদ্যাশালিত্ব প্রামাণিক পুরাবৃত্ত গ্রন্থ দ্বারা প্রতিপন্ন হইতেছে, তখন, অমূলক লোকপ্রবাদ ও তন্মূলক মম্মটের

(১৪) सोऽशेषदेशभाषाज्ञः सर्व्वभाषासु सत्कविः।
कृत्स्नविद्यानिधिः प्राप ख्यातिं देशान्तरेष्वपि॥
৬১১ শ্লোক।

(১৫) श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम्।
কাব্যপ্রকাশ।

(১৬) प्रथितयशसां धावकसौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धान[illegible]
वर्त्तमानकवेः कालिदासस्य कृतौ किं कृतो बहुमा[illegible]

লিখন রক্ষার্থে, ধাবকান্তর কল্পনা করিয়া, শ্রীহর্ষদেবের কবিকীর্ত্তি লোপকরা কোন ক্রমেই ন্যায়ানুগত বোধ হইতেছে না।

মৃচ্ছকটিক।

মৃচ্ছকটিকের রচনা ও বর্ণনা দেখিলে স্পষ্ট বোধ হয় ইহা অতি প্রাচীন গ্রন্থ। ইহাও এক প্রকার সম্ভব বোধ হইতেছে, সংস্কৃত ভাষায় এক্ষণে যত নাটক আছে মৃচ্ছকটিক সর্ব্বাপেক্ষা প্রাচীন। প্রস্তাবনাতে গ্রন্থকর্ত্তার নাম শূদ্রক বলিয়া নির্দ্দিষ্ট আছে। শূদ্রক রাজা ছিলেন; কিন্তু কোন্ সময়ে এবং কোন্ দেশে রাজা ছিলেন তাহা নির্দ্দিষ্ট নাই। প্রস্তাবনাতে লিখিত আছে শূদ্রক অশ্বমেধ যজ্ঞ করিয়াছিলেন এবং, একশত বৎসর দশ দিবস জীবিত থাকিয়া, পরিশেষে অগ্নিপ্রবেশ দ্বারা প্রাণত্যাগ করেন। অশ্বমেধ ও অগ্নিপ্রবেশ অতি প্রাচীন কালের ব্যবহার, সুতরাং মৃচ্ছকটিকও অতি প্রাচীন গ্রন্থ।

মৃচ্ছকটিকলেখক সৎকবি ও সংস্কৃতরচনায় অতিপ্রবীণ ছিলেন। স্থানে স্থানে অতি উৎকৃষ্ট বর্ণনা আছে। শ্লোক সকল অতিসুন্দর। আদ্যোপান্তের রচনা অতি প্রাঞ্জল। সমুদায় পর্য্যালোচনা করিলে, মৃচ্ছকটিক অতি উত্তম কাব্য বটে, কিন্তু প্রশংসনীয় নাটক বলিয়া গণনীয় হইতে পারে না। ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে হইবেক মৃচ্ছকটিক নাটকাংশে শকুন্তলা, উত্তরচরিত ও রত্নাবলী অপেক্ষা অনেক ন্যূন।

প্রস্তাবনাতে মৃচ্ছকটিক শূদ্রকপ্রণীত বলিয়া নির্দ্দেশ আছে। কিন্তু প্রস্তাবনার সমুদায় অংশ বিবেচনা করিলে শূদ্রকরাজার গ্রন্থকর্তৃত্ব বিষয়ে নানা সংশয় উপস্থিত হয়। প্রস্তাবনাতে লিখিত আছে, "গজেন্দ্রগমন, চকোরনয়ন, পূর্ণচন্দ্রবদন, অগাধবুদ্ধিশালী ...কনামে প্রসিদ্ধ কবি ছিলেন"। "শূদ্রক স্বীয় পুত্রকে সিংহা-...ষ্ঠিত দেখিয়া, মহাসমারোহে অশ্বমেধ যজ্ঞ করিয়া, এবং ...বৎসর দশ দিবস আয়ুঃ লাভ করিয়া, অগ্নিপ্রবেশ করিয়া-

ছেন”(১৭)। শূদ্রক রাজা, কবি ও অগাধবুদ্ধিশালী হইয়া, গজেন্দ্র-গমন, চকোরনয়ন, পূর্ণচন্দ্রবদন ইত্যাদি বিশেষণ দ্বারা আপন গ্রন্থে আপনার বর্ণন করিবেন, সম্ভব বোধ হয় না। বিশেষতঃ, এক শত বৎসর দশ দিবস আয়ুঃ লাভান্তে,অগ্নিপ্রবেশ দ্বারা স্বীয় প্রাণত্যাগের বিষয় স্বগ্রন্থে নির্দ্দেশ করা কোন ক্রমেই সংলগ্ন হইতে পারে না। ইহাতে অনায়াসে এরূপ অনুমান করা যাইতে পারে, মৃচ্ছকটিক শূদ্রকরাজার প্রণীত নহে; অথবা প্রস্তাবনাংশ শূদ্রকের মৃত্যুর পর অন্য দ্বারা রচিত ও মৃচ্ছকটিকে যোজিত হইয়াছে। কিন্তু প্রস্তা-বনার ও নাটকের রচনার এরূপ সৌসাদৃশ্য যে এই দুই বিভিন্ন লেখনীর মুখ হইতে বিনির্গত এরূপ প্রতীতি হওয়া দুর্ঘট। বিশে-ষতঃ, প্রস্তাবনা গ্রন্থকর্ত্তা ভিন্ন অন্য ব্যক্তি দ্বারা লিখিত হয় এরূপ ব্যবহার অদৃষ্টচর ও অশ্রুতপূর্ব্ব। সংস্কৃত নাটকের প্রস্তাবনা নাটকের অবয়ব স্বরূপ, তাহা অন্য ব্যক্তি দ্বারা সঙ্কলিত হওয়া কোন ক্রমেই সম্ভাবিত বোধ হয় না।

মুদ্রারাক্ষস।

এই নাটক বিশাখদেবপ্রণীত। প্রস্তাবনায় নির্দ্দিষ্ট আছে, বিশাখ-দেব রাজার পুত্র। বিশাখ সৎকবি ও সংস্কৃত রচনা বিষয়ে অতি প্রবীণ ছিলেন। কিন্তু তাঁহার রচনা সম্যক্ প্রাঞ্জল ও ললিত নহে। যাহাহউক, মুদ্রারাক্ষস এক অত্যুত্তম নাটক। চাণক্য, নন্দবংশকে রাজ্যচ্যুত করিয়া, চন্দ্রগুপ্তকে পাটলিপুত্রের সিংহাসনে নিবিষ্ট করেন। কিন্তু রাজ্যভ্রষ্ট নন্দবংশের অমাত্য রাক্ষস অত্যন্ত প্রভু-পরায়ণ ও নীতিবিদ্যায় অদ্বিতীয় ছিলেন। তিনি চন্দ্রগুপ্তের প্রতি-

(১৭)एतत्कविः किल

द्विरदेन्द्रगतिश्चकोरनेत्रः परिपूर्णेन्दुमुखः सुविग्रहश्च ।
द्विजमुख्यतमः कविर्बभूव प्रथितः शूद्रक इत्यगाधसत्त्वः ॥
राजानं वीक्ष्य पुत्रं परमसमुदयेनाश्वमेधेन चेष्ट्वा
लब्ध्वा चायुः शताब्दं दशदिनसहितं शूद्रकोऽग्निं प्र

পক্ষ থাকিলে তদীয় সিংহাসন বদ্ধমূল হয় না। এই নিমিত্ত চাণক্য, স্বীয় অসাধারণ কৌশল ও নীতিপ্রভাবে, রাক্ষসকে চন্দ্রগুপ্তের প্রধানামাত্য পদ স্বীকার করান। এই বিষয় মুদ্রারাক্ষসে অসাধারণরূপে বর্ণিত হইয়াছে।

বেণীসংহার।

বেণীসংহার ভট্টনারায়ণবিরচিত। এরূপ কিম্বদন্তী আছে, আদিশূর রাজা কান্যকুব্জ হইতে গৌড়দেশে যে পঞ্চ ব্রাহ্মণ আনয়ন করেন, ভট্টনারায়ণ তাঁহাদের মধ্যে এক জন। এই নাটক নাটকের প্রায় সমুদায়লক্ষণাক্রান্ত। সাহিত্যদর্পণের নাটক পরিচ্ছেদে, নাটকসংক্রান্ত বিষয়ের উদাহরণ প্রদর্শনার্থে, বেণীসংহার হইতে যত উদ্ধৃত হইয়াছে অন্য কোন নাটক হইতে তত নহে। কিন্তু ভট্টনারায়ণের রচনা প্রাচীন কবিদিগের রচনার ন্যায় মনোহারিণী নহে। রচনার ন্যূনতা প্রযুক্তই, বেণীসংহার, নাটকের সমুদায় লক্ষণাক্রান্ত হইয়াও, কাব্যাংশে শকুন্তলা, উত্তরচরিত, রত্নাবলী, মৃচ্ছকটিক, মুদ্রারাক্ষস প্রভৃতি অপেক্ষা অনেক ন্যূন। বেণীসংহার বীররসাশ্রিত নাটক। ইহাতে কুরুপাণ্ডবযুদ্ধ বর্ণিত হইয়াছে। স্থানে স্থানে বীর ও করুণরসসংক্রান্ত উত্তম উত্তম রচনা ও উত্তম উত্তম বর্ণনা আছে।

যে সকল নাটকের বিষয় উল্লিখিত হইল, তদ্ভিন্ন সংস্কৃতভাষায় অনেক নাটক আছে। বাহুল্যভয়ে এস্থলে সে সকলের উল্লেখ করা গেল না। সমুদায়ে বিরাশী খানি নাটকের নাম পাওয়া গিয়াছে; তন্মধ্যে তেত্রিশ খানি মাত্র বিদ্যমান বলিয়া বিজ্ঞাত; অবশিষ্ট সকলের দশরূপকে ও সাহিত্যদর্পণের ষষ্ঠ পরিচ্ছেদে [illegible]থ আছে এবং উদাহরণ প্রদর্শনার্থে অনেকেরই কোন কোন [illegible] উদ্ধৃত হইয়াছে। তন্মধ্যে কুন্দমালা, উদাত্তরাঘব, বালরা[illegible] প্রভৃতি কতিপয় নাটকের উদ্ধৃত অংশ দর্শনে বোধ হয় ঐ [illegible]টক অত্যুৎকৃষ্ট।

উপাখ্যান।

বালকদিগের শিক্ষার্থে মনুষ্য, পশু, পক্ষির কল্পিত বৃত্তান্ত ঘটিত যে সকল গ্রন্থ আছে, অথবা গ্রন্থকর্ত্তারা স্বেচ্ছানুসারে নানা লৌকিক ও অলৌকিক বৃত্তান্ত ঘটিত যে সকল গ্রন্থ রচনা করিয়াছেন, ভারত-বর্ষীয় পণ্ডিতেরা উহাদিগকেও কাব্য নামে নির্দ্দেশ করিয়া থাকেন। কিন্তু কি কথাযোজনা, কি রচনা, কি বর্ণনা, কোন অংশেই তাহারা কাব্য নামের অধিকারী নহে। সংস্কৃত উপাখ্যান গ্রন্থ কেবল গদ্য, কেবল পদ্য, ও গদ্য পদ্য উভয়াত্মক আছে। কিন্তু তাহারা প্রকৃত রূপে কাব্য শ্রেণীতে পরিগণিত হইতে পারে না। এই নিমিত্ত তত্তৎকাব্য স্থলে তাহাদের উল্লেখ করা যায় নাই। উপাখ্যানের মধ্যে যে কয়েকখানি বিশেষ প্রসিদ্ধ, এক্ষণে তাহাদিগের বিষয় সংক্ষেপে উল্লিখিত হইতেছে।

পঞ্চতন্ত্র ও হিতোপদেশ।

পঞ্চতন্ত্রের রচনা প্রণালী দৃষ্টে স্পষ্ট বোধ হইতেছে ইহা অতি প্রাচীন গ্রন্থ। প্রাচীন বলিয়া ইহার রচনা অত্যন্ত সহজ। এরূপ সহজ সংস্কৃত গ্রন্থ আর দৃষ্টিগোচর হয় না। পঞ্চতন্ত্রের প্রাচীনত্ব ও সন্নিবন্ধন সহজত্ব ব্যতীত আর কিছুই বিশেষ প্রশংসনীয় নাই। রচনার মাধুর্য্য নাই, কথা যোজনার চাতুর্য্য নাই; অধিকন্তু মধ্যে মধ্যে বহুতর অসার ও অসম্বদ্ধ কথা আছে। বোধ হয়, কোন বিশেষ গুণ নাই বলিয়াই পঞ্চতন্ত্র এতাদৃশ উপেক্ষিত হইয়া আছে; অন্যান্য গ্রন্থের ন্যায় সচরাচর সর্ব্বত্র প্রচলিত নহে। লিপিকর-প্রমাদবশতঃ, পঞ্চতন্ত্রের স্থানের স্থানের পাঠ এমত অপভ্রংশিত হইয়া গিয়াছে যে অর্থবোধ ও তাৎপর্য্যগ্রহ হওয়া দুর্ঘট। পঞ্চ-তন্ত্রে, বিষ্ণুশর্ম্মা বক্তা রাজপুত্রগণ শ্রোতা এই প্রণালীতে, মনুষ্য, পশু, পক্ষির উপাখ্যানচ্ছলে, নীতি উপদিষ্ট হইয়াছে।

পীয় সংস্কৃতবেত্তারা পঞ্চতন্ত্রকে পারস্য, আরব, ইয়ুরোপ প্রভৃতি দেশীয় উপাখ্যানের মূল বলিয়া নিরূপণ করিয়াছেন।

হিতোপদেশকর্ত্তা গ্রন্থারম্ভে প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন পঞ্চতন্ত্রের ও অন্যান্য গ্রন্থের সার সঙ্কলন করিয়া লিখিতে আরম্ভ করিলাম(১৮)। বাস্তবিক, হিতোপদেশ পঞ্চতন্ত্রের প্রতিরূপ স্বরূপ। পঞ্চতন্ত্রের দোষ গুণ অধিকাংশই হিতোপদেশে লক্ষিত হয়। বিশেষ এই, পঞ্চতন্ত্র অপেক্ষা হিতোপদেশের রচনা কিঞ্চিৎ গাঢ়। এবং, প্রস্তুত বিষয়ের বৈশদ্য অথবা দৃঢ়ীকরণ বাসনায়, নানা প্রামাণিক গ্রন্থ হইতে, প্রমাণ, দৃষ্টান্ত, উদাহরণ স্বরূপ উত্তম উত্তম শ্লোক অধিক উদ্ধৃত হইয়াছে। কিন্তু গ্রন্থকর্ত্তার সম্যক্ সহৃদয়তার অসদ্ভাব প্রযুক্ত, অনেক স্থলেই উদ্ধৃত শ্লোক সকল অসংলগ্ন হইয়া উঠিয়াছে। তত্তৎস্থলে প্রকৃত বিষয়ের সহিত সেই সকল শ্লোকের কোন সম্বন্ধ দেখিতে পাওয়া যায় না। গ্রন্থকর্ত্তা লিখিয়াছেন উপাখ্যান ছলে বালকদিগকে নীতি উপদেশ দিতেছি(১৯)। কিন্তু মধ্যে মধ্যে আদিরসঘটিত এক একটী অতি অশ্লীল উপাখ্যান আছে। বালকদিগের নিমিত্ত নীতিপুস্তক লিখিতে আরম্ভ করিয়া, কি বুঝিয়া গ্রন্থকর্ত্তা ঐ সকল অশ্লীল উপাখ্যান সঙ্কলন করিলেন বলিতে পারা যায় না।

কোন্ ব্যক্তি পঞ্চতন্ত্র ও হিতোপদেশ রচনা করিয়াছেন তাহার স্থিরতা নাই। অনেকে বিষ্ণুশর্ম্মাকে এই উভয় গ্রন্থের রচয়িতা বলিয়া থাকেন; কিন্তু তাহার কোন প্রমাণ নাই। পঞ্চতন্ত্রে ও হিতোপদেশে বিষ্ণুশর্ম্মা বক্তা রাজপুত্রগণ শ্রোতা; বোধ হয়, তদ্দর্শনেই বিষ্ণুশর্ম্মা গ্রন্থকর্ত্তা বলিয়া তাঁহাদের ভ্রান্তি জন্মিয়া থাকিবেক। এই দুই গ্রন্থ আদ্যোপান্ত গদ্যে রচিত কেবল মধ্যে মধ্যে গ্রন্থান্তরের শ্লোক উদ্ধৃত হইয়াছে। লল্লূলাল হিতোপদেশকে

(১৮) পঞ্চতন্ত্রাত্তথান্যস্মাদ্গ্রন্থাদাকৃষ্য লিখ্যতে।

([illegible]) যন্নবে ভাজনে লগ্নঃ সংস্কারো নান্যথা ভবেৎ।
[illegible]চ্ছলেন বালানাং নীতিস্তদিহ কথ্যতে॥

নারায়ণপণ্ডিতপ্রণীত বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন (২০)। কিন্তু তাহার কোন প্রমাণ পাওয়া যায় না।

কথাসরিৎসাগর।

কথাসরিৎসাগর সোমদেবভট্টপ্রণীত। ইহা অতি বৃহৎ পুস্তক। সোমদেব স্বগ্রন্থের শেষে লিখিয়াছেন কশ্মীরের অধিপতি অনন্তদেবের মহিষী সূর্য্যবতীর চিত্তবিনোদ সম্পাদনার্থে এই গ্রন্থ রচনা করিলাম। কহ্লণরাজতরঙ্গিণীর সপ্তম তরঙ্গে অনন্তদেব ও সূর্য্যবতীর বৃত্তান্ত আছে। রাজতরঙ্গিণীর গণনা অনুসারে, অনন্তদেব কিঞ্চিদধিক আট শত বৎসর পূর্ব্বে, কশ্মীর মণ্ডলের সিংহাসনে আরূঢ় হইয়াছিলেন। তদনুসারে সোমদেবের কথাসরিৎসাগর আট শত বৎসরের পুস্তক। এই অনন্তদেব রত্নাবলীকর্ত্তা শ্রীহর্ষদেবের পিতামহ। কথাসরিৎসাগরে যে সমস্ত উপাখ্যান আছে তাহা তাদৃশ মনোহর নহে। ঐ সমুদায় কেবল অলৌকিক ও অদ্ভুত বৃত্তান্ত ঘটিত। অলৌকিক ও অদ্ভুত বৃত্তান্ত ঘটিত উপাখ্যান সকল এককালে সাতিশয় মনোহর ছিল; কিন্তু এক্ষণে আর তাহাদের তাদৃশ চমৎকারজনকত্ব নাই। সোমদেবের লিখনানুসারে বোধ হইতেছে বৃহৎকথা নামে এক বহুবিস্তৃত উপাখ্যান গ্রন্থ ছিল ইনি তাহার সারসংগ্রহ করিয়াছেন। এই গ্রন্থ আদ্যোপান্ত পদ্যে রচিত।

বহুবিস্তৃত সংস্কৃত সাহিত্যে যে সমস্ত প্রধান প্রধান গ্রন্থ আছে তাহাদিগের বিষয় সঙ্ক্ষেপে উল্লিখিত হইল। সংস্কৃত কবিরা আদি

(২০) काहू समै श्रीनारायण पंडित नें नीतिशास्त्रनि तें कथानिकौं संग्रह करि संस्कृतमें एक ग्रन्थ बनाय वाकौ नाम हितोपदेश धरयौ ॥

রস, করুণরস ও শান্তরস সংক্রান্ত যে সকল বর্ণনা করিয়াছেন তাহা যেরূপ মনোহর, তাঁহাদের হাস্য, বীর, ভয়ানক প্রভৃতি রস সংক্রান্ত বর্ণনা তাদৃশ মনোহর নহে। ফলতঃ, তাঁহারা মধুর ও ললিত বর্ণনাতে যেরূপ নিপুণ; উদ্ধত, ওজস্বি ও প্রগাঢ় বর্ণনাতে তদনুরূপ নিপুণ নহেন। নায়ক নায়িকার প্রথমদর্শন, পূর্ব্বরাগ, মান, বিরহ, প্রবাস, শোক, বৈরাগ্য, উপবন, বসন্ত, লতা, পুষ্প প্রভৃতির বর্ণনা যেরূপ হৃদয়গ্রাহিণী; যুদ্ধ, ভয়, পর্ব্বত, সমুদ্র প্রভৃতির বর্ণনা তদনুযায়িনী নহে।

উপসংহার।

সংস্কৃত ভাষা ও সংস্কৃত সাহিত্যশাস্ত্রের বিষয় সংক্ষেপে উল্লিখিত হইল। অনেকে সংস্কৃত ভাষার অনুশীলন নিতান্ত ব্যর্থ ও একান্ত অকিঞ্চিৎকর জ্ঞান করিয়া থাকেন। এই নিমিত্ত সংস্কৃত ভাষার ফলোপধায়কতা বিষয়ে সংক্ষেপে কিঞ্চিৎ বর্ণন করিয়া প্রস্তাব সমাপন করিব।

সংস্কৃত ভাষানুশীলনের নানা ফল। ইয়ুরোপে শব্দবিদ্যার যে ইয়ত্তী শ্রীবৃদ্ধি হইয়াছে তাহার মূল সংস্কৃত ভাষার অনুশীলন। ইয়ুরোপীয় পণ্ডিতেরা সংস্কৃত ভাষার অনুশীলন দ্বারা অন্যান্য ভাষার মূল নির্ণয়, স্বরূপ পরিজ্ঞান ও মর্ম্মোদ্ভেদে সমর্থ হইয়াছেন; এবং এই পৃথিবী যে নানা মানবজাতির আবাসস্থান তাহাদিগের কে কোন্ শ্রেণীভুক্ত, কে কোন্ দেশের আদিম নিবাসী লোক, কে কোন্ প্রদেশ হইতে আসিয়া কোন্ প্রদেশে বাস করিয়াছে ইত্যাদি নির্দ্ধারণ করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। কিন্তু ইয়ুরোপীয় শব্দবি... যাবৎ সংস্কৃত ভাষার সহায়তা প্রাপ্ত না হইয়াছিল ততদিন পর্য্যন্ত এই সকল বিষয় অন্ধকারে আচ্ছন্ন ছিল। এই নিমিত্তই ডাক্তর মেক্স মূলর সংস্কৃত ভাষাকে সকল ভাষার ভাষা বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন।

দ্বিতীয়তঃ, সংস্কৃত ভাষানুশীলনের এক অতি প্রধান ফল এ. যে, ইদানীন্তন কালে ভারতবর্ষে হিন্দী বাঙ্গালা প্রভৃতি যে সকল ভাষা কথোপকথনে ও লৌকিক ব্যবহারে প্রচলিত আছে সে সমুদায় অতি হীন অবস্থায় রহিয়াছে। ইহা এক প্রকার বিধিনির্ব্বন্ধ স্বরূপ হইয়া উঠিয়াছে যে ভূরি পরিমাণে সংস্কৃত কথা লইয়া ঐ সকল ভাষায় সন্নিবেশিত না করিলে তাহাদিগের সমৃদ্ধি ও শ্রীবৃদ্ধি সম্পাদন করা যাইবেক না। কিন্তু সংস্কৃত ভাষায় সম্পূর্ণরূপ ব্যুৎপত্তি ব্যতিরেকে তৎসম্পাদন কোন ক্রমেই সম্ভাবিত নহে। ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে হইবেক যে ভারতর্ষীয় সর্ব্বসাধারণ লোকে বিদ্যানুশীলনের ফলভোগী ও উপকারভাগী না হইলে, তাহাদিগের চিত্তক্ষেত্র হইতে চিরপ্ররূঢ় কুসংস্কারের সমূলে উন্মূলন হইবেক না; এবং হিন্দী বাঙ্গালা প্রভৃতি তত্তৎ প্রদেশের প্রচলিত ভাষাকে দ্বার স্বরূপ না করিলে সর্ব্বসাধারণের বিদ্যানুশীলন সম্পন্ন হওয়া অসম্ভব। সুতরাং ইয়ুরোপীয় কোন ভাষা হইতে পুরাবৃত্ত ও পদার্থবিদ্যা লইয়া তত্তৎ প্রচলিত ভাষায় সংকলন করা অত্যাবশ্যক। কিন্তু, সংস্কৃত না জানিলে কেবল ইঙ্গরেজী শিখিয়া আমরা যে ঐ মহোপকারক গুরুতর বিষয় সম্পন্ন করিতে পারিব ইহা কোন ক্রমেই সম্ভাবিত নহে।

তৃতীয়তঃ, পূর্ব্বকালীন লোকদিগের আচার, ব্যবহার, রীতি, নীতি, ধর্ম্ম, উপাসনা ও বুদ্ধির গতি প্রভৃতি বিষয় সকল মনুষ্যমাত্রের অবশ্যজ্ঞেয় ইহা বোধ হয় সকলেই অঙ্গীকার করিয়া থাকেন। অন্যান্যদেশসংক্রান্ত এই সমস্ত বিষয় তত্তদ্দেশীয় পুরাবৃত্ত গ্রন্থ দ্বারা অবগত হওয়া যায়। সংস্কৃত ভাষায়, রাজতরঙ্গিণী ব্যতিরিক্ত, প্রকৃত পু.. বৃত্ত গ্রন্থ এক খানিও নাই। রাজতরঙ্গিণীতেও এই বহুবিস্তৃত ভারতবর্ষের এক অতি ক্ষুদ্রাংশ কশ্মীরের পুরাবৃত্ত মাত্র সঙ্কলিত আছে। সেই সঙ্কলিত পুরাবৃত্তও সর্ব্বসাধারণ লোকসংক্রান্ত নহে। কে কোন্ সময়ে সিংহাসনে আরোহণ করিয়াছিলেন, কে কত দিন রাজ্যশাসন ও প্রজাপালন করিয়াছিলেন কে

কোন্ সময়ে সিংহাসনভ্রষ্ট হইয়াছিলেন কে কাহাকে সিংহাসন ভ্রষ্ট করিয়া স্বীয় ক্ষমতাতে রাজ্যাস্পদ অধিকার করিয়াছিলেন, এই রূপ, কেবল রাজাদিগের বৃত্তান্তমাত্র সঙ্কলিত হইয়াছে। এইরূপ প্রকৃত পুরাবৃত্তের নিতান্ত অসদ্ভাব স্থলে বেদ, স্মৃতি, দর্শন, পুরাণ, ইতিহাস, সাহিত্যাদি শাস্ত্রের অনুশীলন ব্যতিরেকে পূর্ব্বকালীন হিন্দুদিগের আচার ব্যবহারাদি পরিজ্ঞানের আর কোন পথ নাই। আর ভারতবর্ষীয় লোকেরা যে শাস্ত্রজালে দৃঢ়বদ্ধ হওয়াতে তাহা-দিগের চিত্তক্ষেত্র নানা কুসংস্কাররূপ কণ্টকবৃক্ষে আবৃত হইয়া আছে, যাবতীয় সংস্কৃতশাস্ত্রে কৃতবিদ্য না হইলে ঐ সমস্ত শাস্ত্রের অযৌক্তিকতা উদ্ভাবন করিতে পারা যাইবেক না। তদ্ভিন্ন যাবতীয় সাহিত্যশাস্ত্রের অনুশীলনে যে আমোদ, যে উপকার, যে উপদেশ লাভ হইয়া থাকে সংস্কৃত সাহিত্যশাস্ত্র সেই আমোদ, সেই উপকার, সেই উপদেশ প্রদানে অসমর্থ নহে। এই সমস্ত সংস্কৃতভাষার অনুশীলনসাপেক্ষ।

এক্ষণে, এতদ্দেশে যাঁহারা লেখা পড়ার চর্চা করিয়া থাকেন, তাঁহারা যে এইরূপ মহোপকারিণী সংস্কৃত ভাষার অনুশীলনে একান্ত উপেক্ষা করেন ইহা অল্প আক্ষেপের বিষয় নহে।